MPEDA
समाचार पत्र

खंड 5 संख्या 6 जनवरी 2018

गोवा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर पर्रिकर ने भारत अंतर्राष्ट्रीय समुद्री खाद्य प्रदर्शनी के 21 वें संस्करण का उद्घाटन किया

गोवा संस्करण भारत अंतर्राष्ट्रीय समुद्री खाद्य प्रदर्शनी एक बड़ी सफलता बन गई

वाणिज्य और उद्योग मंत्री और नागरिक उड्डयन मंत्री, श्री सुरेश प्रभु ने एमपीईडीए निर्यात पुरस्कार समारोह में प्रतिनिधियों को संबोधित किया

ISSN 0245-7059

www.mpeda.gov.in

CPF-TURBO PROGRAM

The shrimp industry has seen major developments and tasted success over the years, And not only are we proud to be part of it, but also take pride in pioneering it. To ensure the success and profitability of the Indian Shrimp Industry, our highly determined team with committed Aquaculture specialists constantly provide the shrimp farmers with access to the latest and updated technology.

CPF-TURBO PROGRAM -
Pioneering Successful and Profitable Shrimp Aquaculture

अंतर्वस्तु

खंड V, संख्या 6, जनवरी 2018

कवर स्टोरी

03
गोवा में भारत अंतर्राष्ट्रीय समुद्री खाद्य प्रदर्शनी से उमड़ी एक नई तरंग।

26
समुद्री मछली लैंडिंग की मुख्य विशेषताएं

39
कर्नाटक मत्स्य मेला 2017 में एमपीईडीए की भागीदारी

41
पर्यावरण अनुकूल, चिरस्थाई श्रिम्प कृषि पर प्रशिक्षण

42
गुंटूर के राजबंगारू पालम में प्रशिक्षण

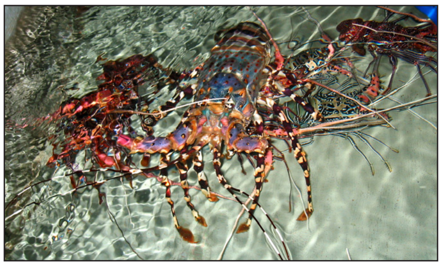

44
उष्णकटिबंधीय लॉबस्टर जलकृषि भारत के लिए संभावित नए उद्योग

48
जैव जलकृषि के लिए एमपीईडीए और स्विट्ज़रलैंड के सीओपीपी के साथ साझेदारी

इस प्रकाशन के विद्वान लेखों में व्यक्त विचार लेखक के विचार हैं और एमपीईडीए के विचारों का गठन नहीं करते हैं।
इस प्रकाशन के विद्वानों के लेखों में जानकारी की सटीकता की ज़िम्मेदारी लेखकों के साथ निहित है और न ही एमपीईडीए और न ही संपादकीय बोर्ड की जिम्मेदारी है।

एम.पी.ई.डी.ए
खण्ड V / संख्या. 6 / 2018 जनवरी
समाचार पत्र

संपादक मंडल

श्री टी. डोला शंकर, आईओएफ़एस
निदेशक (वि.)

श्री बी. श्रीकुमार
सचिव

श्रीमती आशा सी. परमेश्वरन
संयुक्त निदेशक (गु.नि.)

श्री पी. अनिल कुमार
संयुक्त निदेशक (अक्वा)

श्री के. वी. प्रेमदेव
उप निदेशक (विकास एवं ए व आई) (प्रभारी)

संपादक
श्री डॉ. एम.के. राम मोहन
संयुक्त निदेशक (वि.)

सह संपादक
श्रीमती दिव्या मोहनन के.एम.
वरिष्ठ लिपिक

संपादकीय समर्थन
बिवेल्ड कॉर्पोरेट सोल्युशंस लिमिटेड
166, जवहर नगर, कड़वन्त्रा,
कोच्ची, केरल, भारत- 682 020
फोन: 0484 2206666, 2205544
www.bworld.in, life@bworld.in

लेआउट
रोबी अंबाड़ी

www.mpeda.gov.in
support@mpeda.gov.in

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
की ओर से श्री बी श्रीकुमार, सचिव द्वारा
मुद्रित और प्रकाशित
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
एमपीईडीए हाऊस, पनम्पिल्ली एवेन्यू,
कोच्ची-682 036, फोन: +91 484 2311979

एमपीईडीए हाऊस,
पनम्पिल्ली एवेन्यू,
कोच्ची-682 036
द्वारा प्रकाशित

प्रिंट एक्सप्रेस
44/1469 ए, अशोका रोड,
कलूर, कोच्ची - 682 017
में मुद्रित

डॉ. जयतिलक, भा.प्र.से.
अध्यक्ष

प्रिय मित्रों,

भारत अंतर्राष्ट्रीय समुद्री खाद्य प्रदर्शनी के 21 वें संस्करण को व्यापक रूप से सुव्यवस्थित और अच्छी तरह से जनाकीर्ण प्रदर्शनी के रूप में प्रशंसित किया गया था। मैं इस पल, प्रत्येक प्रदर्शक, प्रतिनिधि, गोवा राज्य सरकार, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, समुद्री खाद्य निर्यातक सदस्यों और उन सभी को जिन्होंने इस कार्यक्रम को बड़ी सफलतापूर्वक आयोजित करने में अपना योगदान दिया है, का भी धन्यवाद करता हूँ।

आईआईएसएस के पश्चात्, एमपीईडीए 40 निर्यातकों के साथ बोस्टन में आयोजित की जानेवाली उत्तरी अमेरिका के प्रमुख समुद्री खाद्य प्रदर्शनी उत्तरी अमेरिका में भाग लेने वाला है। अलावा इसके, लंबे समय से रूसी बाजार में हमारे समुद्री खाद्य निर्यात को प्रभावित करने वाले व्यापारिक मुद्दों से निपटने केलिए एक प्रतिनिधिमंडल को रूस में भेजने की योजना बनाई गई है। समुद्री खाद्य प्रदर्शनी ग्लोबल, ब्रसेल्स में निर्यातकों की एक बड़ी भागीदारी परिकल्पित है।

मुझे यह बताने में अत्यंत खुशी है कि प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) के तहत 'समुद्री खाद्य प्रसंस्करण श्रमिकों के कौशल विकास' पर एमपीईडीए द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव की मंजूरी मिली है। कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) ने नौ समुद्र तटीय राज्यों में इसके कार्यान्वयन हेतु परियोजना को मंजूरी दे दी है और पीएम के वीवाई योजना के प्राथमिक शिक्षा (आरपीएल) - टाइप 2 की मान्यता के तहत शामिल किया है। समुद्र तटीय राज्यों में एमपीईडीए द्वारा परियोजना को लागू किया जाएगा, तथा 200 प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अधीन 6000 समुद्री खाद्य श्रमिकों को प्रशिक्षण देने का लक्ष्य है। इसके लिए प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण जारी है।

एमपीईडीए द्वारा कई गतिविधियों और पहल की योजना बनाई गई हैं, जिसके बारे में, मैं अगले अंक में विस्तार से बताऊंगा।

धन्यवाद।

गोवा में भारत अंतर्राष्ट्रीय समुद्री खाद्य प्रदर्शनी से उमड़ी एक नई तरंग

गोवा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर पर्रिकर मड़गाव, गोआ में भारत अंतर्राष्ट्रीय समुद्री खाद्य प्रदर्शनी (आईआईएसएस) 2018 का उद्घाटन करते हुए

21st INDIA INTERNATIONAL SEAFOOD SHOW 2018

21वीं भारत अंतर्राष्ट्रीय समुद्री खाद्य प्रदर्शनी 2018

तीन दिवसीय भारत अंतर्राष्ट्रीय समुद्री खाद्य प्रदर्शनी (आईआईएसएस), समुद्री क्षेत्र में द्विवार्षिक अंतर्राष्ट्रीय आयोजन का 21 वां संस्करण, 27 से 29 जनवरी, 2018 तक गोआ के मार्गो, में 'सुरक्षित और चिरस्थाई भारतीय जलकृषि' को प्रमुख विषय के रूप में लेकर आयोजित किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य भारत में कैप्चर और कल्चर मात्स्यिकी में अपनाने वाले तकनीकी प्रगति एवं चिरस्थाई प्रथाओं को उजागर करना था।

ओपन स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स ग्राउंड, फतोर्डा, मड़गाव, गोवा में समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए), जो केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के तहत एक सांविधिक निकाय है एवं भारत के समुद्री खाद्य निर्यात संघ (एसईएआई) द्वारा संयुक्त रूप से आईआईएसएस 2018 का आयोजन किया गया, जिसने तीन दिनों में 12 देशों के प्रतिनिधियों सहित और 3,500 से अधिक व्यापार प्रतिनिधियों और 3,000 से अधिक प्रतिनिधियों को आकर्षित किया।

आईआईएसएस, जिसे 10 वर्षों के बाद वेस्ट कोस्ट में आयोजित किया गया, ने इस क्षेत्र को पूर्वी तट, विशेष रूप से आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों, जिसने जलकृषि में काफी उन्नति की है और जो समुद्री निर्यात में उनके योगदान को मजबूत कर रहे हैं जैसा बनने का आह्वान किया।

श्री सुरेश प्रभु, माननीय केंद्रीय वाणिज्य मंत्री ने उद्घाटन दिवस पर प्रतिनिधियों को संबोधित किया, और उपग्रह इमेजरी का उपयोग कर कल्चर मात्स्यिकी के लिए संभावित भूमि का मानचित्र बनाने की योजनाओं की रूपरेखा तैयार करते हुए और निर्यात को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक विपणन और विकास रणनीति तैयार करने हेतु जलकृषि की खोज करने वाले सभी राज्यों को वचनबद्ध समर्थन दिया।

श्री प्रभु ने कहा कि मंत्रालय चिरस्थाई जलकृषि और मात्स्यिकी उद्योग को मज़बूत बनाने के लिए एक विस्तृत कार्यनीति तैयार करने हेतु एमपीईडीए और एसईएआई को काम सौपेंगे।

उन्होंने आगे कहा कि सरकार के लिए अंतर्देशीय मात्स्यिकी एक प्राथमिक क्षेत्र है और इसका लक्ष्य सभी 13 तटीय राज्यों में जलकृषि विकास हेतु एक प्रणाली की संरचना करना है।

"समुद्री खाद्य क्षेत्र में जलकृषि सिर्फ सबसे बड़ा रोजगार उत्पादक नहीं है, बल्कि यह हमें उस भूमि का उपयोग करने में भी मदद कर रहा है जो किसी अन्य उद्देश्य के लिए उपयुक्त नहीं है, उदाहरण के लिए, खारे पानी वाला भूमि।हम अगले कुछ महीनों में उपग्रह इमेजरी का उपयोग करके ऐसे सभी क्षेत्रों को व्यवस्थित रूप से मानचित्रित करेंगे और जलकृषि के विकास के लिए संभावित क्षेत्रों की पहचान करेंगे,"

"माननीय मंत्री जी ने कहा, "हम यह सुनिश्चित करने के लिए सक्रिय रूप से राज्यों के साथ काम करेंगे कि वे इन भूमियों का बेहतर उपयोग कर सकें और अपनी निर्यात क्षमता का लाभ उठा सकें।"

सरकार भारतीय उत्पादों के लिए ब्रांड इक्विटी को बढ़ावा देने और बनाने के लिए दुनिया भर में 10 विपणन कार्यालय बनाने का भी प्रस्ताव रखती है।

श्री प्रभु ने कहा कि निर्यातकों को इस बदलती दुनिया में अपने उत्पादों के विपणन की समीक्षा करने की भी ज़रूरत है। "विपणन यानि आज सिर्फ अपने सामान बेचना नहीं है, उत्पादों की गुणवत्ता, पैकेजिंग, अपने शेल्फ जीवन को बढ़ाने पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।"

डॉ. ए. जयतिलक आईएएस, अध्यक्ष, एमपीईडीए ने नोट किया कि संगठन आपूर्ति श्रृंखला में अधिक मूल्यवर्धन के लिए दबाव डाल रहा है और विदेशी बाजारों की मांग के आपूर्ति के लिए गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

"खाने के लिए तैयार मदों में मूल्यवर्धन, जैव सुरक्षा संबंधी मामलों के कारण कुछ बाजारों द्वारा उठाए गए प्रतिरोध को हल करेगा। उत्पादन स्तर पर रोग और रोगजनक मुक्त प्रणाली घोषित करने वाले तंत्र को लागू करके उन शंकाओं को दूर करना भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि, "इसी तरह, हमें अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में भारतीय समुद्री खाद्य के बाजार के पहुंच में सुधार लाने के लिए गुणवत्ता और अनुमार्गणीयता की कड़ी को भी मजबूत करने की भी आवश्यकता है।"

उन्होंने यह भी बताया कि निर्यात के लिए एक महत्वपूर्ण तत्व यह है कि यदि मत्स्य को जीवित उपलब्ध नहीं कर सकते तो यथा संभव ताजा उपलब्ध कराया जाए इससे जीवित खाद्य श्रिंप और मत्स्य अंतरराष्ट्रीय

श्री सुरेश प्रभु, वाणिज्य राज्य मंत्री एमपीईडीए निर्यात पुरस्कार समारोह में प्रतिनिधियों को संबोधित करते हैं

बाजार में उच्च मांग के साथ व्यापार का एक संभावित आकर्षक क्षेत्र है।

"उन्होंने कहा कि भारत में सीफूड महाशक्ति बनने की क्षमता है और अगर हम इस क्षमता का पूरी तरह लाभ उठाते हैं तो, निर्यात मात्रा के 20 प्रतिशत की वृद्धि या दोगुना लक्ष्य प्राप्त करना उतना मुश्किल नहीं होगा।"

गोवा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर परिकर, श्री सरदेसाई,कृषि मंत्री, श्री विनोद पालियेकर, मात्स्यिकी और जल संसाधन मंत्री, डॉ. ए. जयतिलक आईएएस, अध्यक्ष, एमपीईडीए, श्री वी. पद्मनाभन, राष्ट्रीय अध्यक्ष, एसईएआई, श्री बाबू कवलेकर, विपक्षी नेता, गोवा, श्री एमएम इब्राहिम, अध्यक्ष, एसईएआई, गोवा और श्री के. हरि बाबू, संसद सदस्य ने उद्घाटन समारोह में भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए श्री परिकर ने कहा कि अनुपयोगित परंतु बड़े क्षेत्र वाले अंडमान और निकोबार के तटीय क्षेत्र का ज़्यादातर उपयोग करना चाहिए, चिरस्थाई गभीर सागर मत्स्यन की खोज और समुद्री जल प्रदूषण रासायनिक उर्वरक की धुलाई से उत्पन्न मौजूदा मत्स्यन क्षेत्रों के अतिदोहन एवं प्रजनन तल की क्षति जैसे मुद्दों को हल करने की आवश्यकता है।

उन्होंने आंध्र प्रदेश से तरकीब हासिल करने और जलकृषि उत्पादन में किसानों को प्रशिक्षण देने में भी रुचि व्यक्त की। उद्घाटन समारोह में अपनी प्रारंभिक टिप्पणियों में डॉ. जयतिलक आईएएस ने बताया कि वर्ष 2016-17 में, भारत ने 37,870.90 करोड़ रुपये मूल्यकी 11,34,948 मीट्रिक टन समुद्री खाद्य, मुख्य रूप से प्रशीतित श्रिम्प और प्रशीतित मत्स्य का निर्यात किया तथा अप्रैल-नवंबर 2017 के अस्थायी निर्यात आंकड़ें ने क्रमशः समुद्री खाद्य निर्यात की मात्रा और मूल्य (यूएस डॉलर में) में 18.72 प्रतिशत और 15.16 प्रतिशत की वृद्धि दिखाई हैं।

श्री मनोहर परिकर,गोवा के मुख्यमंत्री

डॉ. जयतिलक ने सूचित किया कि जलकृषि विकास, उच्च प्रसंस्करण क्षमता और अनुकूल बाजार स्थितियों की वजह से चालू वित्त वर्ष के दौरान निर्यात से आय 6 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है।

जलकृषि विकास, उच्च प्रसंस्करण क्षमता और अनुकूल बाजार स्थितियों की वजह से चालू वित्त वर्ष के दौरान निर्यात से आय 6 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है।

"अगर हम उत्पादन में हमारे प्रयासों को बनाए रखने और मूल्य वर्धन के प्रयासों को बढ़ाने में सक्षम हैं, तो भारत कुछ वर्षों के अंदर नॉर्वे, वियतनाम, अमेरिका या थाईलैंड जैसे देशों को छोड़कर चीन के साथ समुद्री खाद्य का दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक बन सकता है।"

समारोह की अध्यक्षता करने के दौरान गोवा के कृषि मंत्री श्री विजय सरदेसाई ने उच्च दोहन को एक प्रमुख मद के रूप में व्यक्त किया और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों को प्रभावित करने वाले 'मत्स्य अकाल' जैसी स्थितियों से बचने के लिए सक्रिय उपायों की मांग की।

उन्होंने कहा, "एक छोटे, प्रगतिशील राज्य के रूप में, गोवा हानिकारक मत्स्यन तरीकों को रोकने के लिए एलईडी रोशनी पर प्रतिबंध लगाने जैसे ठोस उपायों को ले रहा है, लेकिन अगर हम चिरस्थाई तौर पर निर्यात करना चाहते हैं तो बड़े राज्यों को भी इस तरह काम अपनाने की जरूरत है।"

श्री विनोद पालियेंकर, मात्स्यिकी एवं जल संसाधन मंत्री ने कहा कि निर्यात को बढ़ाने और घरेलू उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर मत्स्य की उपलब्धि सुनिश्चित कराने के उद्देश्य के साथ वे गोवा में एक मत्स्यपालन निगम स्थापित करने की योजना बना रहे हैं।

एसईएआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वी. पद्मनाभम ने सीफ़ूड उत्पादकों और निर्यातकों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डाला और उम्मीद की कि आईआईएसएस 2018 में विचार-विमर्श इन मुद्दों में से कुछ को हल करने में मदद करेंगे।

आईआईएसएस 2018 में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों में भारत, अमेरिका,

आईआईएसएस 2018 स्मारिका का विमोचन

ब्रिटेन, स्पेन, जापान, ऑस्ट्रेलिया, चीन, वियतनाम, दक्षिण कोरिया जैसे देशों से निर्यातक, मशीनरी आपूर्तिकर्ता, आयातक, अन्य सेवा प्रदाता, शोधकर्ता, नीति निर्माता आदि शामिल थे।

प्रदर्शनी में 7,000 वर्गमीटर क्षेत्र में फैले 325 स्टालों में उन्नत प्रसंस्करण और पैकेजिंग मशीनरी, साथ ही शीत भंडार सुविधाओं, परीक्षण उपकरण और मत्स्यन गियर की एक श्रृंखला को प्रस्तुत किया था। परंपरागत समुद्री खाद्य उत्पादों और अन्य मूल्यवर्धित उत्पादों की एक श्रृंखला भी प्रदर्शित की गई थी।

सीओओपी, स्विट्जरलैंड के साथ साझेदारी

आईआईएसएस 2018 में समुद्री उद्योग के लिए एक और महत्वपूर्ण पहल, यूरोपीय संघ के बाजार के लिए जैविक श्रिम्प का उत्पादन करने हेतु भारत में किसानों और उद्यमियों को सुसज्जित करने के लिए स्विट्जरलैंड की सबसे बड़ी खुदरा और थोक कंपनियों में से एक, सीओओपी सहकारी समिति के साथ सहयोग का ज्ञापन था।

डॉ. ए. जयतिलक, अध्यक्ष, एमपीईडीए और श्री जेरार्ड जुरलटर, प्रबंधन सदस्य, सीओपीपी ने एमओसी पर हस्ताक्षर किए।

परियोजना के तहत,एमपीईडीए द्वारा उद्यमियों की पहचान करने में सहायता दी जाएगी और उन्हें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रमाणीकरण प्रोटोकॉल को पूरा करने वाले उच्च गुणवत्ता वाले जैविक श्रिम्प के उत्पादन पर तकनीकी सलाह प्रदान किया जाएगा।

सीओओपी, जिसके पूरे स्विट्ज़रलैंड में लगभग 2,200 बिक्री आउटलेट

श्री विनोद पालियेंकर, मात्स्यिकी एवं जल संसाधन मंत्री, गोवा

श्री जेरार्ड जूरलटर, प्रबंधन सदस्य, सीओपीपी और डॉ. ए. जयतिलक, अध्यक्ष, एमपीईडीए द्वारा हस्ताक्षरित निर्यातोन्मुख जैविक श्रिम्प कृषि पर साझेदारी ज्ञापन सौंपते हुए

श्री जेरार्ड जूरलटर, प्रबंधन सदस्य, सीओपीपी और डॉ. ए. जयतिलक, अध्यक्ष, एमपीईडीए साझेदारी ज्ञापन पर हस्ताक्षर करते हुए। बाईं तरफ हैं, मेसर्स बेबी मराइन ग्रूप के श्री अलेक्स नैनान

और पूरे यूरोप में सक्रिय थोक / उत्पादन व्यवसाय हैं, ने प्रशिक्षण सहित विकास गतिविधियों के लिए 15 प्रतिशत तक के प्रीमियम पर प्रसंस्कृत जैविक श्रिम्प और वित्त पोषण के माध्यम से अतिरिक्त 5 प्रतिशत हासिल करने का प्रस्ताव दिया है।

एमपीईडीए और सीओओपी जैविक श्रिम्पबीज के उत्पादन केलिए एक श्रिम्प हैचरी के प्रमाणन की सुविधा प्रदान करेंगे और इसी तरह परियोजना केलिए एक जैविक चारा स्त्रोत बनाने हेतु छोटे पैमाने पर फ़ीड मिल इकाई को प्रमाणित और सूचीबद्ध करेंगे। यह पयलट परियोजना केरल में प्रारभ में 1000 हे. क्षेत्र में जैविक ब्लॉक टैगर श्रिम्प (पीनियस मोनोडोन) का उत्पादन करने हेतु कार्यरत होगा एवं यदि सफल हुआ तो भारत भर में

एमपीईडीए और सीओओपी जैविक श्रिम्पबीज के उत्पादन केलिए एक श्रिम्प हैचरी के प्रमाणन की सुविधा प्रदान करेंगे और इसी तरह परियोजना केलिए एक जैविक चारा स्त्रोत बनाने हेतु छोटे पैमाने पर फ़ीड मिल इकाई को प्रमाणित और सूचीबद्ध करेंगे।

इसका विस्तार किया जाएगा ।

यह भारत में जलकृषि के लिए एक नई दिशा प्रदान करेंगे जो न केवल भारतीय समुद्री खाद्य निर्यात का मुख्य आधार है बल्कि बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा करके और नमकीन बंजर भूमि एवं अतदैशीय संपदाओं का उपयोग करके घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के लिए आवश्यक खाद्य मत्स्य को बढ़ाकर अर्थव्यवस्था में सहायता देते हैं।

एमपीईडीए निर्यात पुरस्कार

श्री सुरेश प्रभु ने 21 वें आईआईएसएस उद्घाटन दिवस पर सबसे उत्कृष्ठ निर्यात के लिए, वर्ष 2015-16 और 2016-17 केलिए एमपीईडीए द्वारा संस्थापित पुरस्कार वितरित किए।

गभीर सागर मत्स्यन, चिरस्थाई जलकृषि, अनुपालन और प्रशिक्षण सहित कई श्रेणियों में उत्कृष्ट निष्पादन दर्ज करने वाली कंपनियों को एमपीईडीए वार्षिक पुरस्कार प्रदान करता है। एमपीईडीए निर्यात पुरस्कार 1990 में स्थापित किए गए थे। I से V तक की श्रेणी के तहत दो सबसे सर्वोच्च निर्माता-निर्यातकों को पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं।

राज्य मंत्री द्वारा वर्ष 2015-16 और 2016-17 के लिए कुल 27 कंपनियों को निष्पादन पुरस्कार प्रदान किए गए। समारोह में गोवा के कृषि मंत्री श्री विजय सरदेसाई और मात्स्यिकी और जल संसाधन मंत्री और श्री विनोद पालियेंकर तथा एमपीईडीए सदस्य और सांसद श्री के. हरि बाबू ने भाग लिया।

श्री सुरेश प्रभु, वाणिज्य राज्य मंत्री सबसे उत्कृष्ठ निर्यात के लिए
वर्ष 2015-16 और 2016-17 के एमपीईडीए पुरस्कार वितरित करते हैं

आईआईएसएस 2020

सम्मेलन में यह घोषणा की गई कि आईआईएसएस के 22 वें संस्करण का आयोजन वर्ष 2020 में कोच्ची में किया जाएगा।

तकनीकी सत्र

आईआईएसएस 2018 के दौरान आयोजित तकनीकी सत्रों के तीन दिनों में, समुद्री खाद्य उद्योग हितधारकों, नीति निर्माताओं और अन्य विशेषज्ञों ने कई विषयों पर चर्चा की। इसने निर्यातकों को जीएसटी के तत्वों पर स्पष्टता की आवश्यकता, नियमों और प्रमाणन की सुव्यवस्थितता, असूचीयन के मुद्दों सहित अपने संदेहों और चिंतावों को प्रस्तुत करने का मंच प्रदान किया।

समापन दिवस में नीदरलैंड दूतावास के सहयोग से यूरोपीय संघ-भारत श्रिम्प ने व्यापार के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। भारत, ईयू बाजार में श्रिंप का अग्रणी आपूर्तिकार है।

एक सत्र के दौरान, व्यवसाय में विश्वसनीयता को कायम रखने के लिए कई प्रमाणन प्राप्त करने की लागत और प्रयास के बोझ को दूर करने के लिए एक सामान्य मानक प्रमाणन की आवश्यकता पर भारतीय समुद्री खाद्य उद्योग के हितधारकों ने आवाज उठाई। अलग-अलग देशों द्वारा उनके प्रमाणन का पालन करने की मांग और कंपनियों द्वारा सभी प्रमाणन के रिकॉर्ड तैयार करने और उनके रख - रखाव की दुष्कर प्रक्रिया के बारे में भी उन्होंने बताया।

हालांकि, कई लोगों ने स्वीकार किया कि अंतिम उपभोक्ताओं के लिए प्रमाणन एक आवश्यक आश्वासन है। श्री चंद्रजीत, निदेशक, विम्पी लेबोरेटरीज, कुवैत, ने कहा, "प्रमाणन न केवल गुणवत्ता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है, बल्कि ब्रांड जागरूकता भी सुनिश्चित करता है, जिसके बदले में कंपनी को बेहतर ग्राहक संबंध, कीमतों में वृद्धि जैसे कई सकारात्मक परिणाम हासिल हो सकते हैं।"

उन्होंने विभिन्न प्रमाणपत्रों जैसे जोखिम विश्लेषण और महत्वपूर्ण नियंत्रण बिंदु (एचएसीसीपी), जैविक, रासायनिक, और शारीरिक खतरों से खाद्य सुरक्षा के लिए एक मानक दृष्टिकोण, आईएसओ 9001: 2015, ब्रिटिश रिटेल कंसोर्टियम (बीआरसी) और अन्य बातों पर भी विस्तार से बताया। श्री चंद्रजीत ने कहा कि आईएसओ 9001: 2008 जैसे प्रमाणन, जो अब वैध नहीं है, को उत्पादों और संबंधित सामग्रियों से हटाया जाना चाहिए।

जापान मात्स्यिकी संघ के वरिष्ठ कार्यपालक, प्रबंध निदेशक, श्री योशियायुकी शिजं ने एक अलग सत्र में पर्यावरण-लेबलिंग के महत्व के बारे में व्याख्यान दिया।

उन्होंने कहा कि "मरीन इको-लेबल्स मत्स्य उत्पादों से जुड़े चिह्न हैं जो यह सूचित करने के लिए हैं कि उन्हें एक ऐसी विधि द्वारा पकड़ा गया है जो संपदा प्रबंधन की ग्राहक समझ को बढ़ावा देने के लक्ष्य के साथ पारिस्थितिकी और संसाधनों की चिरस्थायिता पर विचार करता है।

आईआईएसएस 2018 का तकनीकी सत्र

सत्र – 1 (27.01.2018 अपराह्न)

सत्र के अध्यक्ष: डॉ. सी. एन. रविशंकर, निदेशक, केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोच्ची	
विषय	**प्रवक्ता**
मुख्य व्याख्यान: **समुद्री खाद्य विपणन में प्रौद्योगिकी और मूल्यवर्धन की भूमिका**	डॉ सी एन रविशंकर, निदेशक, सीआईएफटी, कोच्ची, भारत
प्रमुख बाजारों में समुद्री खाद्य सुरक्षा आवश्यकताओं का अवलोकन	डॉ. आई करुणसागर, वरिष्ठ निदेशक (अंतर्राष्ट्रीय संबंध), नित विश्वविद्यालय, मंगलुरु, भारत
जीएसटी कार्यान्वयन और समुद्री खाद्य क्षेत्र में इसका निहितार्थ	श्री कार्तिक आईवीआरएन, लक्ष्मीकुमारन और श्रीधरन, चेन्नई, भारत
अंतर्राष्ट्रीय मानकों पर भोजन योग्य श्रिम्प और मत्स्य का जीवित परिवहन: विनिर्देश और आवश्यकता	श्री लिम मेन्ग हयात, प्रधान संचालक अधिकारी अपोलो एक्वेरियम, सिंगापुर
अंतरराष्ट्रीय समुद्री खाद्य विपणन में ई-कॉमर्स का उपयोग	श्री संजय शर्मा, ग्लोबल हेड, टीडीआई इंटरनेशनल इंडिया (पी) लिमिटेड, नई दिल्ली, भारत

सत्र – 2 (28.01.2018 पूर्वाह्न)

सत्र के अध्यक्ष: श्री एलियास सैट, महासचिव, भारत समुद्री खाद्य निर्यातक संघ	
विषय	**प्रवक्ता**
मुख्य व्याख्यान: **समुद्री खाद्य विपणन और प्रमाणन**	श्री एलियास सैट,महासचिव, एसईएआई चेन्नई, भारत
मूल्य वृद्धि "अवधारणा, अवसर और चुनौतियां"	श्री केनी थॉमस, मुख्य कार्यकारी, जिन्नी मराईन ट्रेडेर्स, वेरावल, गुजरात, भारत
अंतरराष्ट्रीय बाजार में समुद्री खाद्य की मांग और आपूर्ति: मूल्य प्रभावित करनेवाले कारक	श्री अलन, आइसलैंड के प्रबंध निदेशक सीफूड बैराक्लो लिमिटेड (आईएसबी), यूके
समुद्री खाद्य प्रमाणन वरदान या अभिशाप	श्री चंद्रजीत, निदेशक, विम्पी प्रयोगशाला, कुवैत
जापानी इको - लेबलिंग	श्री योशीयुकी शेज, वरिष्ठ कार्यकारी, प्रबंध निदेशक, जापान मात्स्यिकी संघ, जापान

सत्र – 3 (28.01.2018 अपराह्न)

विषय: समुद्री खाद्य निर्यात व्यापार : विनियामक आवश्यकताओं को पूरा करने में चुनौतियाँ	
सत्र के अध्यक्ष: डॉ. एस.के. सक्सेना, निदेशक, भारतीय निर्यात निरीक्षण	
विषय	**प्रवक्ता**
मुख्य व्याख्यान	डॉ. एस के सक्सेना, निदेशक, ईआईसी
निर्यात प्रमाणीकरण: विनियामक अनुपालन प्राप्त करने में ईआईसी की भूमिका	श्री आर एम मंडलिक, उप निदेशक, निर्यात निरीक्षण परिषद
यूरोपीय संघ के मानकों के आधार पर भारतीय समुद्री खाद्य निर्यात के लिए चुनौतियां और अवसर	श्री वोज्किएच ड्जिवोरस्की, यूरोपीय संघ के लिए भारत का प्रतिनिधिमंडल के स्वास्थ्य और खाद्य सुरक्षा परामर्शदाता

समुद्री खाद्य व्यापार में जैव सुरक्षा उपायों को पूरा करने में आने वाली चुनौतियां	डॉ के के विजयन, निदेशक, आईसीएआर - खारा-पानी जलकृषि संस्थान, चेन्नई
भारतीय जलकृषि समुद्री खाद्य निर्यात के लिए चुनौतियां और अवसर	डॉ ए रविशंकर, आईपीएस, महानिदेशक ड्रग्स एंड कॉपी राइट्स, ड्रग कंट्रोल प्रशासन, आंध्र प्रदेश
ऑस्ट्रेलियाई विनियमों के आधार पर भारतीय समुद्री खाद्य निर्यात की चुनौतियां और अवसर	डॉ नोरा गॉलवे, परामर्शदाता (कृषि) ऑस्ट्रेलियन उच्चायोग, नई दिल्ली
समुद्री खाद्य निर्यात: उद्योग परिप्रेक्ष्य	श्री एलियास सैट, महासचिव एसईएआई

सत्र – 4 (29.01.2018 पूर्वाह्न)

भारत : ई यु श्रिम्प संवाद	
आशंसा: श्री आनंद कृष्णन, उप कृषि सलाहकार, नेथरलैंड राजदूतावास, नई दिल्ली	
सत्र के अध्यक्ष : डॉ. ए. जयतिलक, भा प्र.से., अध्यक्ष, समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण, कोच्ची, भारत	
विषय	**प्रवक्ता**
स्वागत भाषण- विषय का परिचय, धन्यवाद ज्ञापन, इंट्रो सोल / एसटीआईपी, कार्यशाला का उद्देश्य, और परिणाम	श्री विल्लियम वान डेर पिजल सॉलिडारिडाड / समुद्री खाद्य व्यापार आसूचना पोर्टल
उद्घाटन भाषण	डॉ ए जयतिलक आईएएस, अध्यक्ष, एमपीईडीए, भारत
ईयू बाजार में भारतीय श्रिम्प पर खरीदार का दृष्टिकोण (वाणिज्यिक परिप्रेक्ष्य)	श्री फ्रैंक मोलेनेर क्लास पुल
लेखा परीक्षा के संबंध में मॉजूदा विकास पर डीजी सॉंटे परिप्रेक्ष्य	श्री वोज्शिच डिज़िरोस्की यूरोपीय संघ डीजी सॉंटे प्रतिनिधि, दिल्ली
लेखा परीक्षा के संबंध में वर्तमान विकास पर निर्यात निरीक्षण परिषद परिप्रेक्ष्य	डॉ एस के सक्सेना, निदेशक, भारतीय ईआईसी
लेखापरीक्षा के संबंध में वर्तमान विकास पर ईयू आयातक	श्री ओलिवियर होटलेट, यूरोपीय समुद्री खाद्य आयातक और प्रसंस्करण गठबंधन / डच मत्स्य संघ
लेखापरीक्षा के संबंध में मौजूदा विकास पर भारतीय निर्यातक	श्री एलियास सैट, महासचिव, एसईएआई
ईयू-भारत उदाहरण एनएल-ईयू प्रतिबंध को रोकने / उठाने के लिए भारत का सहयोग	श्री वाउटर वेरहे, कृषि परामर्शदाता, नीदरलैंड का राज्य के दूतावास
चर्चा: यूरोपीय संघ-भारत श्रिम्प व्यापार को बढ़ावा देने के लिए सहयोग कैसे करें	श्री विल्लीम वान डेर पिजल निदेशक, सॉलिडारिदाद एसएसईए
अंतिम अभ्युक्तियाँ	डॉ एम के राम मोहन संयुक्त निदेशक, एमपीईडीए, भारत
समापन	श्री वाउटर वेरहे, कृषि परामर्शदाता, नीदरलैंड का राज्य के दूतावास

SEAI

ECOSYSTEM PARTICIPANTS
Weibo
Social Media
Enterprise Social Platform
AutoNavi
Location-Based
Professional Service Providers
MARKETPLACES
Mobile Browser
Marketing
淘宝网
Taobao.com
AliExpress
Digital Entertainment
天猫 TMALL.COM
Alibaba.com
Financing & Payment
聚划算
Sellers
Buyers
Logistics
Online and mobile commerce platform
TECHNOLOGY
DATA
TEAM
TDI

श्री शिज़े ने आगे कहा कि लेबल का उद्देश्य अपने उत्पादों को बढ़ावा देकर मत्स्य उत्पादकों के संरक्षण प्रयासों का समर्थन करना है। उन्होंने कहा कि भविष्य में चिरस्थाई मात्स्यकी को सुनिश्चित करने के लिए उनकी ओर से प्रयास आवश्यक हैं।

समुद्री उत्पादों के प्रसंस्करण और निर्यात के विभिन्न पहलुओं से निपटने वाले तकनीकी सत्र में भाग लेते हुए, उन्होंने कहा कि केंद्रीय और राज्य स्तरीय करों की बहुलता को एकल जीएसटी में समन्वय करने से वे बहुत खुश थे। हालांकि, उन्हें नई कर व्यवस्था की बारीकियों को समझना मुश्किल हो रहा था।

उन्होंने सूचित किया कि हालांकि सीफ़ूड निर्यातकों ने स्वीकार किया कि केंद्र सरकार ने सामान और सेवा कर (जीएसटी) पर अपनी कई चिंताओं को दूर किया है, फिर भी कई जीएसटी प्रावधान अभी भी अस्पष्ट हैं, जो उनके व्यापार को प्रभावित करते हैं।

हालाकि कर वापसी प्रक्रिया को स्पष्ट और सरलीकृत किया गया था, फिर भी निर्यातकों को अभी तक धनवापसी नहीं हुई है क्योंकि इस उद्देश्य के लिए कोई समय सीमा नहीं थी। अन्य कष्टमय मुद्दे थे, व्यापारी निर्यातकों के गोदाम और त्रुटि लाभ के दावे, जिसे राज्य जीएसटी में न रखकर केवल केंद्र जीएसटी में रखे गए।

उनके संदेहों पर स्पष्टीकरण देते हुए व्यापार कानून विशेषज्ञ श्री कार्तिक आईवीआरएन ने कहा कि निर्यात से संबंधित कई जीएसटी खंडों में स्पष्टता की ज़रूरत है। समुद्री उत्पादों के निर्यात लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक सक्षम जीएसटी व्यवस्था महत्वपूर्ण है। केंद्र सरकार, समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) और समुद्री खाद्य निर्यातक संघ (एसईएआई) 2022 तक निर्यात में 10 अरब अमेरिकी डॉलर का लक्ष्य प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं।

डॉ सी एन रविशंकर, निदेशक, केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोच्ची ने समुद्री खाद्य को प्रसंस्कृत करने की नई और उभरती प्रौद्योगिकियों का ब्योरा दिया, जिससे किसानों की मदद होती हैं ताकि वे शेल्फ जीवन में वृद्धि करके अपने उपज के लिए लाभकारी मूल्य प्राप्त कर सकते हैं।

डॉ. आई करुणसागर, वरिष्ठ निदेशक (अंतर्राष्ट्रीय संबंध), नित विश्वविद्यालय, मंगलुरू ने प्रमुख बाजारों में समुद्री खाद्य की सुरक्षा आवश्यकताओं पर एक परिदृश्य प्रस्तुत किया।

श्री लिम मेन्ग हुअट, प्रमुख संचालन अधिकारी, अपोलो एक्वेरियम, सिंगापुर, ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में जीवित खाद्य श्रिम्प और मत्स्य की मांग बढ़ती जा रही है जो समुद्री उत्पादों के जीवित परिवहन के लिए नवीनतम तकनीकों को अपनाने को मजबूर कर रहे हैं।

डॉ. ए. जयतिलक, एमपीईडीए के अध्यक्ष आईआईएसएस में भाषण देते हैं

ASSOCIATION OF INDIA
EAI

INTERNATIONAL
SEAFOOD SHOW 2018
nternational Seafood Show
SEAI

21st
INDIA I ERNAT
SEAFOOD SH
A JAYATHILAK
MANOHAR PARRIKAR

21st INDIA INTERNATIONAL SEAFOOD SHOW 2018

गोवा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर पारिकर, आईआईएसएस 2018 मेला कैटलॉग का विमोचन करते हैं

SILVER POMPANO

SILVER POMPANO

Research & Dev
MPEDA

TECHNIC
SESSION
21st
INDIA INTERNATIONAL
SEAFOOD SHOW 2018

स्टॉल पुरस्कार 2018

सर्वोत्तम स्टॉल (विदेशी) की श्रेणी में वियतनाम में स्थित मेसर्स एशिया रेफ्रिजरेशन इंडस्ट्री जाइंट स्टॉक कंपनी, ने प्रथम पुरस्कार हासिल किया। जबकि मेसर्स ग्लोरी कंपनी लिमिटेड, वियतनाम कंपनी को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

पंजीकृत निर्यातकों की श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ स्टाल के लिए पुरस्कार मैसर्स गदरे मराईन एक्स्पोर्ट्स प्रा. लिमिटड द्वारा प्राप्त किया गया था जबकि मेसर्स के एन सी आग्रो लिमिटेड ने इस श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार हासिल किया।

सर्वश्रेष्ठ भारतीय स्टाल के लिए मेसर्स इशिदा इंडिया प्राइवेट लिमिटेड को पुरस्कार दिया गया, जबकि इस श्रेणी में दूसरा सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार मैसर्स परी केमिकल्स को प्राप्त हुआ।

भारत के समुद्री खाद्य निर्यातक संघ (एसईएआई) के अध्यक्ष श्री वी पद्मनाभम की उपस्थिति में, एमपीईडीए के अध्यक्ष डॉ ए जयतिलक आईएएस द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए।

सर्वश्रेष्ठ स्टॉल : विदेशी–एशिया प्रशीतन उद्योग संयुक्त स्टॉक कंपनी

दूसरा सर्वश्रेष्ठ स्टॉल : विदेशी–ग्लोरी कंपनी लिमिटेड

सर्वश्रेष्ठ स्टॉल : पंजीकृत निर्यातक – गदरे मरीन एक्स्पोर्ट्स प्रा. लिमिटेड

दूसरा सर्वश्रेष्ठ स्टॉल : पंजीकृत निर्यातक – केएनसी अग्रो लिमिटेड

सर्वश्रेष्ठ स्टॉल : भारतीय –इशीदा इंडिया प्रा. लिमिटेड

दूसरा सर्वश्रेष्ठ स्टॉल : भारतीय – परी केमिकल्स

आईआईएसएस 2018 उत्पाद पुरस्कार

जैसा कि पिछले IISS 2016 में किया गया था, आईआईएसएस 2018 के दौरान 3 श्रेणियों में उत्पाद नवोत्थान के लिए एक उत्पाद पुरस्कार प्रतियोगिता सफलतापूर्वक आयोजित की गई थी। इस पहल का मुख्य उद्देश्य प्रसंस्करणकर्ताओं निर्यातकों को नए उत्पादों के साथ आने के लिए प्रोत्साहित करना था। आईआईएसएस 2018 उत्पाद पुरस्कारों की श्रेणियां निम्नलिखित थीं:

i. सर्वश्रेष्ठ सुविधाजनक उत्पाद

इस श्रेणी में उन समुद्री खाद्य उत्पादों के बीच मुक़ाबला है जो अंतिम उपयोगकर्ताओं और उपभोक्ताओं के लिए सुविधाजनक हैं।

ii. सर्वश्रेष्ठ खुदरा पैकेजिंग

इस श्रेणी में समुद्री खाद्य पैकेजिंग पेश करने की प्रतियोगिता है जो खुदरा विपणन के लिए अभिप्रेत है, या जोकि 2 किलो से कम उत्पादों को पैक करने के लिए घरेलू या अंतरराष्ट्रीय बाजार में पहले से ही उपलब्ध / पेश किए गए हैं और निर्णय मानदंडों के अनुरूप गुणवत्ता वाले हों।

iii. सर्वश्रेष्ठ परिवर्तनात्मक उत्पाद

इस श्रेणी में नए समुद्री खाद्य उत्पादों के लिए पूर्ण और जो जो घरेलू या अंतरराष्ट्रीय खुदरा बाजार में शुरू करने के लिए तैयार हैं या बड़ी क्षमता रखते हैं और निर्णय मानदंडों के अनुरूप गुण वाले हों ।

विजेता

1. सर्वश्रेष्ठ सुविधा उत्पाद

विजेता : मसाला मैकरेल, गदरे मरीन एक्स्पोर्ट्स प्रा. लिमिटेड, रत्नगिरी

2. सर्वश्रेष्ठ खुदरा पैकेजिंग

विजेता : अविकल पैक में ताज़ा तिलापिया मत्स्य : वेस्ट कोस्ट फ्रोज़ेन फुड्स प्रा. लिमिटेड, मुंबई

3. सर्वश्रेष्ठ नवीनतम उत्पाद

विजेता : मत्स्य सीख़ कबाब – वेस्ट कोस्ट फ्रोजन फुड्स प्रा. लिमिटेड, मुंबई

आईआईएसएस 2018 के सर्वश्रेष्ठ स्टॉल तथा उत्पाद के पुरस्कार विजेताओं के साथ डॉ. ए. जयतिलक, भा.प्र.से., अध्यक्ष, एमपीईडीए

वर्ष 2015-16 के निर्यात पुरस्कृतों की सूची

वर्ग	स्थान	पुरस्कृत
I.(क) कुल निर्यात - मूल्य वार	प्रथम	मेसर्स फाल्कन मराइन एक्सपोर्ट लिमिटेड, भुवनेश्वर
	द्वितीय	मेसर्स देवी सी फूड्स लिमिटेड, विशाखपट्टनम
I.(ख) कुल निर्यात- मात्रा वार	प्रथम	मेसर्स मुक्का सी फूड इंडस्ट्रीज़ प्रा. लिमिटड मैंगलोर
	द्वितीय	मेसर्स फाल्कन मराइन एक्सपोर्ट लिमिटेड, भुवनेश्वर
II. मद -वार		
(क) प्रशीतित श्रिम्प	प्रथम	मेसर्स फाल्कन मराइन एक्सपोर्ट लिमिटेड, भुवनेश्वर
	द्वितीय	मेसर्स देवी सी फुड्स लिमिटेड, विशाखपट्टनम
(ख) प्रशीतित सेफालोपोड्स	प्रथम	मेसर्स ब्लू वॉटर फूड्स एवं एक्स्पोर्ट्स प्रा. लिमिटड, मैंगलोर
	द्वितीय	मेसर्स ग्रांड मरीन फूड्स, आलप्पुषा
(ग) प्रशीतित फिन फिश	प्रथम	मेसर्स रामेश्वर कोल्ड स्टोरेज, वेरावल
	द्वितीय	मेसर्स इंडियन मरीन इंडस्ट्रीज़, कोच्ची
(घ) शीतित समुद्री उत्पाद	प्रथम	मेसर्स अक्वा वर्ल्ड एक्स्पोर्ट्स प्रा. लिमिटड, चेन्नई
	द्वितीय	मेसर्स गोल्डमराइन एक्स्पोर्ट्स प्रा. लिमिटड, चेन्नई
(च) सूखी समुद्री उत्पाद	प्रथम	मेसर्स मुक्का सी फूड इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड , मैंगलोर
	द्वितीय	मेसर्स ग्लोबल इंपेक्स ट्रेडिंग, मुंबई
(छ) सेफालोपोड्स के अलावा मोलस्कस	प्रथम	मेसर्स सी बॉय फिशेरीस प्रा. लिमिटेड , त्रिवेंद्रम
	द्वितीय	मेसर्स कपित्तान एक्सपोर्टिंग को., कोल्लम
III. मछलीघर मत्स्य के अलावा जीवित समुद्री उत्पाद	प्रथम	मेसर्स कन्नन मराईन फूड्स, चेन्नई
	द्वितीय	मेसर्स स्कानेट ट्रेडिंग प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई
IV. मछलीघर मत्स्य	प्रथम	मेसर्स पेसकीना इंडिका, कोलकाता
	द्वितीय	मेसर्स एशियन एक्स्पोर्ट्स, कोलकाता
V. विशेष प्रयास		
(क) मूल्यवर्धित उत्पाद	प्रथम	मेसर्स आक्सीलेरटेड फ्रीसे ड्राईड्ग को. लिमिटेड, आलप्पुषा
	द्वितीय	मेसर्स एचआईसी-एबीएफ़ स्पेशल फूड्स प्राइवेट लिमिटेड, आलप्पुषा
(ख) महिला उद्यमी	प्रथम	मेसर्स वसई फ्रोजेन फूड्स, थाने

वर्ष 2016-17 के निर्यात पुरस्कृतों की सूची

वर्ग	स्थान	पुरस्कृत
I.(क) कुल नियात - मूल्य वार	प्रथम	मेसर्स देवी फिशरीज़ लिमिटेड, विशाखपट्टनम
	द्वितीय	मेसर्स देवी सी फूड्स लिमिटेड, विशाखपट्टनम
I.(ख) कुल निर्यात - मात्रा वार	प्रथम	मेसर्स फाल्कन मराइन एक्सपोर्ट लिमिटेड, भुवनेश्वर
	द्वितीय	मेसर्स मुक्का सी फूड इंडस्ट्रीज़ प्रा. लिमिटड मैंगलोर
II. मद -वार		
(क) प्रशीतित श्रिम्प	प्रथम	मेसर्स देवी फिशरीज़ लिमिटेड, विशाखपट्टनम
	द्वितीय	मेसर्स देवी सी फूड्स लिमिटेड, विशाखपट्टनम
(ख) प्रशीतित सेफालोपोड्स	प्रथम	मेसर्स प्रोफंद वायलट मरीन एक्स्पोर्ट्सप्रा. लिमिटेड, कोच्ची
	द्वितीय	मेसर्स सिल्वर सीफुड़, पोरबंदर
(ग) प्रशीतित फिन फिश	प्रथम	मेसर्स सिल्वर सीफुड़, पोरबंदर
	द्वितीय	मेसर्स इंडियन मरीन इंडस्ट्रीज़, कोच्ची
(घ) शीतित समुद्री उत्पाद	प्रथम	मेसर्स अक्वा वर्ल्ड एक्स्पोर्ट्स प्रा. लिमिटड, चेन्नई
	द्वितीय	मेसर्स गोल्डमराइन एक्स्पोर्ट्स प्रा. लिमिटड, चेन्नई
(च) सूखी समुद्री उत्पाद	प्रथम	मेसर्स मुक्का सी फूड इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड , मैंगलोर
	द्वितीय	मेसर्स राज फिश मील एंड ऑइल कंपनी, उडुपी
(छ) सेफालोपोड्स के अलावा मोलस्कस	प्रथम	मेसर्स सी बॉय फिशेरीस प्रा. लिमिटेड , त्रिवेंद्रम
	द्वितीय	मेसर्स जाक्विन सीफ़ुड्स, कडलूर
III. मछलीघर मत्स्य के अलावा जीवित समुद्री उत्पाद	प्रथम	मेसर्स कन्नन मराईन फूड्स, चेन्नई
	द्वितीय	मेसर्स स्कानेट ट्रेडिंग प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई
IV. मछलीघर मत्स्य	प्रथम	मेसर्स मलबार ट्रोपिकल्स, कोलकाता
	द्वितीय	मेसर्स अक्वाटिक वर्ल्ड, मुंबई
V. विशेष प्रयास		
(क) मूल्यवर्धित उत्पाद	प्रथम	मेसर्स गदरे मरीन एक्सपोर्ट प्रा. लिमिटेड, रत्नगिरी
	द्वितीय	मेसर्स एक्सिलारेटड फ्रीज़ ड्रायिंग कंपनी लिमिटेड, आलप्पुषा
(ख) महिला उद्यमी	प्रथम	मेसर्स वसई फ्रोजेन फूड्स, थाने

Freight Brokers Global Services

The world within reach.

C-TPAT Customs-Trade Partnership Against Terrorism
BUILDING PARTNERSHIPS • PROTECTING FREEDOM

Looking to Export to the U.S.?

HOW CAN FBGS HELP YOU?

Let our dedicated team with decades of experience assist you

National Customs Brokerage

Domestic and International Air Freight

FCL/LCL Ocean Freight

Full Service, Inter-Modal & LTL Trucking

Cold/Dry/Bonded Warehouse & Distribution

Full Service FDA Security & Compliance Consulting

First Time Importer Assistance

- Bond and Licensing Assistance
- FDA/USDA/Fish & Wildlife - OGA Compliance
- ADD/CVD Monitoring & Refunds
- "Green Ticket Applications" & Monitoring
- National Cold Storage Network
- Reduced Duty Rates

LET'S GET STARTED!

Call: +91 98478 02324

Email: ExportUSA@FreightBrokersGlobal.com

1200 Brunswick Ave, Far Rockaway, NY 11691

www.FreightBrokersGlobal.com

नवंबर 2017 के दौरान भारत के चयनित बंदरगाहों में समुद्री मत्स्य के अवतरण की मुख्य विशेषताएं

विनोथ एस. रवीन्द्रन, वी. वी. अफ़्सल, जोइस वी. तोमस
नेटफिश-एमपीईडीए

एमपीईडीए की पकड़ प्रमाणन प्रणाली के हिस्से के रूप में भारत के पूर्वी तथा पश्चिमी तटों के साथ प्रमुख मत्स्यन बंदरगाहों पर नाव आगमन और मत्स्य अवतरण पर जानकारी नेटफिश द्वारा रिकार्ड किया जाता है। नेटफिश देश के 9 समुद्री राज्यों में से 47 प्रमुख बंदरगाहों और अवतरण केंद्रों (तालिका 1) में नाव आगमन और मत्स्य के अवतरण को रिकॉर्ड करके भारतीय तट में समुद्री मत्स्य कैप्चर का मॉनिटरिंग करता है। अवतरण का मूल्यांकन करने हेतु संग्रहीत आँकड़े को प्रजाति-वार, राज्य-वार, क्षेत्र-वार और पत्तन-वार के अनुसार संसाधित किया जाता है। इस रिपोर्ट में नवंबर 2017 के दौरान भारत के प्रमुख बंदरगाहोंमें किए गए समुद्री मत्स्य अवतरण पर प्रकाश डाला गया है।

तालिका 1. आंकड़ा संग्रह के लिए चुने गए बंदरगाहों, अवतरण केन्द्रों की सूची

अव	अव	अव
1	केरल	बेपूर
2		पुतियाप्पा
3		तोप्पुंपड़ी
4		मुनंबम
5		शक्तिकुलंगरा
6		तोट्टप्पल्ली
7		कायमकुलम
8		विज़िन्जम
9	कर्नाटक	मैंगलोर
10		माल्पे
11		गंगोली
12		तंद्री
13		कारवार
14		होन्नावर
15	महाराष्ट्र	हर्णे
16		न्यू फेरी वार्फ
17		रत्नगिरी (मिरकरवाड़ा)
18		सस्सोन डॉक
19	गुजरात	वेरावल
20		पोरबंदर
21		मंग्रोल
22	पश्चिम बंगाल	डिघा (संकरपुर)
23		देशप्राण
24	पश्चिम बंगाल	नमखाना
25		सुल्तानपुर
26		काकद्वीप
27		राइडिगी
28	ओड़ीशा	पारद्वीप
29		बलरामगड़ी
30		बहाबलपुर
31		धमरा
32	आंध्र प्रदेश	काक्किनाडा
33		मछलीपटनम
34		निज़ामपटनम
35		विशाखपटनम
36	तमिल नाडु	चेन्नई
37		पजईयार
38		नागपट्टिनम
39		तुतिकोरिन
40		कड्लूर
41		मंडपम
42		चिन्नमुट्टम
43		कुलच्चल
44		पुडुच्चेरी
45		कारैक्कल
46	गोआ	कट्बोन्ना
47		मालिम

मत्स्य अवतरण पर आधारित अनुमान

वर्ष 2017 के दौरान 47 चयनित बंदरगाहों और अवतरण केन्द्रों से कुल मिलाकर 104988.48 टन की समुद्री पकड़ रिकार्ड की गई। कुल पकड़ में 54485.10 टन (52%) पेलाजिक फिनफ़िश संसाधन, 2549 9.46 टन (24%) डेमर्सल फिनफिश और 25003.9 1 टन (24%) शेलफिश संसाधन (चित्र 1) शामिल थे।महीने के दौरान मत्स्य मदों के 112 किस्मों का अवतरण रिकार्ड किया गया, जिनमें से कालक्रम के अनुसार उच्च योगदान देने वाली पाँच किस्म भारतीय ऑयल सरडीन, भारतीय मैकेरल, रिबनफिश, कटलफिश और स्क्विड थे। इन पाँच क़िस्मों ने कुल पकड़ (चित्र 2) का 48% प्राप्त किया। इस अवधि के

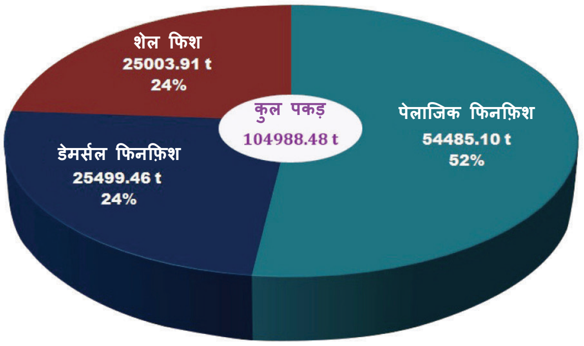

चित्र 1: नवंबर 2017 के दौरान मदवार मत्स्य अवतरण

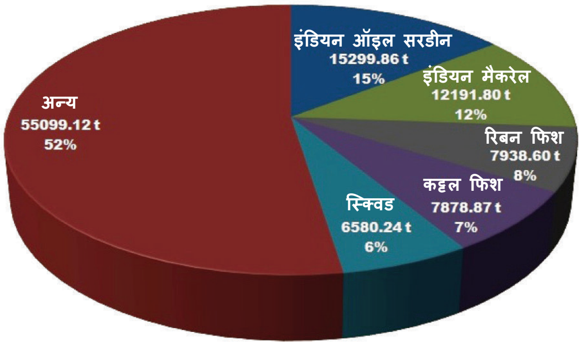

चित्र 2: नवंबर 2017 के दौरान अवतरण किए गए प्रमुख मद

दौरान इंडियन ऑयल सरडीन किस्म ने 15299.86 टन का अधिकतम अवतरण रिकार्ड किया जो कुल पकड़ का 15% था। उपरोक्त नामित 5 प्रमुख मत्स्य मदों के अलावा, अवतरण के अन्य महत्वपूर्ण योगदानकर्ता क्रमश: 4347.56 टन और 4242.25 टन के हिस्से के साथ जापानी थ्रेडफिन ब्रीम और क्रॉकर्स थे। महीने के दौरान स्पोट्टेड बट्टर फिश किस्म 0.27 टन के साथ न्यूनतम मात्रा में रिकार्ड की गई।

महीने के दौरान विभिन्न मत्स्य मदों के श्रेणीवार मात्रा तालिका 2 में रिकार्ड की गई है। पेलाजिक फिनफिश संसाधनों में से, सबसे ज्यादा अवतरण इंडियन ऑयल सरडीन और जिसके बाद भारतीय मैकेरल और रिबनफ़िश ने रिकार्ड किया। डेमर्सल फिनफिश के मामले में, प्रमुख योगदानकर्ता बुल्स आईस, क्रॉकर्स और जापानी थ्रेडफिन ब्रीम थे। मॉलस्कैन स्टॉक ने लगभग 64% कटलफिश, स्क्विड और ऑक्टोपस जैसे शेलफिश का अवतरण किया गया और शेष 36% क्रस्टेसियन थे।क्रस्टेसियनों में, पीनिड श्रिम्प प्रमुख योगदानकर्ता थे, जिसमें सबसे ज्यादा हिस्सा करिक्काडी श्रिम्प का (2505.04 टन)था।

तालिका 2. नवंबर 2017के दौरान विभिन्न मत्स्यन मदों की श्रेणीवार लैंडिंग

मत्स्य मद	मात्रा टनों में	कुल पकड़ की %
पेलाजिक फिनफिश		
इंडियन ऑयल सरडीन	15299.86	14.57
भारतीय मैकेरल	12191.80	11.61
रिब्बन फिश	7938.60	7.56
ट्यूना	3559.39	3.39
एंचोवीस	2423.10	2.31
लेस्सर सरडीन	2325.99	2.22
सीर फिश	2052.48	1.95
बॉम्बे डक	2009.39	1.91
स्काड्स	2005.71	1.91
डोलफ़िन फिश	1026.55	0.98
त्रिवालीस	737.83	0.70
हॉर्स मकरेल	638.28	0.61
लेयथर जाकेट	482.95	0.46
बैरक्कुड़ा	436.71	0.42
हेर्रिंग्स	381.86	0.36
हिल्सा	242.84	0.23
क़्वीन फिश	115.34	0.11
ओरिएंटल बोनिटो	98.60	0.09
सेल फिश	84.74	0.08
मर्लिंस	84.42	0.08
मुल्लेट	71.97	0.07
भारतीय इलिषा	56.11	0.05
बार्बेड़ हाल्फ़बीक	54.70	0.05
फ्लाट नीडिल फिश	38.99	0.04
कोबिया	30.71	0.03
सीबास	27.77	0.03
नीडिल फिश	21.90	0.02
रैनबो रन्नर	17.86	0.02
इंडियन सालमोन	14.44	0.01
सिल्वर सिल्लागो	10.84	0.01
मिल्क फिश	1.90	0.00
इंडियन त्रेड फिश	1.50	0.00
कुल	***54485.10***	***51.90***
डेमर्सल फिनफिश		
बुल्स आई	4991.75	4.75
क्रोकेर्स	4447.01	4.24
जापानीस त्रेड फिन ब्रीम	4347.56	4.14
रीफ़ कोड्स	3022.96	2.88
लिज़ार्ड फिश	2156.21	2.05
कैट फिश	1609.51	1.53
स्नापर	1527.45	1.45

सोल फिश	1440.87	1.37
पोंफ्रेट	1012.87	0.96
ईल	231.67	0.22
गोट फिश	222.25	0.21
पोनी फिश	129.24	0.12
रैस	128.68	0.12
मून फिश	76.64	0.07
टैगर पेर्च	39.68	0.04
ग्लास्सीपेर्च्लेट	35.23	0.03
घोल	31.10	0.03
सी ब्रीम्स	23.45	0.02
व्हिप फिन सिल्वर बिड्डी	7.65	0.01
इंडियन हलिबट	6.37	0.01
पैरट फिश	5.60	0.00
ब्लैक टिप शार्क	4.24	0.00
स्पाईन फूट	1.20	0.00
स्पोट्टेड बट्टर फिश	0.27	0.00
कुल	***25499.46***	***24.29***
शेलफिश		
क्रसटेशियन		
पीनिड श्रिम्प	8280.97	7.89
समुद्री केकड़ा	643.51	0.61
कीचड़ केकड़ा	108.13	0.10
झींगा	16.17	0.02
गैर पीनिड श्रिम्प	1.20	0.00
कुल क्रसटेशियन	9049.98	8.62
मोलस्कस		
कट्टलफिश	7878.87	7.50
स्क्विड	6580.24	6.27
कीचड़ केकड़ा	1494.83	1.42
कुल मोलस्कस	15953.93	15.20
कुल शैलफिश	25003.91	23.82
कुल योग	***104988.48***	***100.00***

क्षेत्र-वार अवतरण (लैंडिंग)

क्षेत्र वार अवतरण डेटा का आकलन करने पर, यह पाया गया कि दक्षिण पश्चिम तट (केरल, कर्नाटक और गोवा के 15 चयनित पत्तन) ने अधिकतम 46704.60 टन (45%) और इसके बाद उत्तर पश्चिम (महाराष्ट्र और गुजरात तटों के 7 चयनित अवतरण स्थान) 41,895.81 टन (40%) (चित्र 3)दर्ज किया। दक्षिण पूर्व क्षेत्र के लिए तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के 14 बंदरगाहों के अवतरण का पकड़ आँकड़ा बनाया गया, जिसमें पकड़ के कुल 4925.55 टन में से केवल 5% ही दर्ज किया गया था।उत्तर पूर्व क्षेत्र में ओडिशा और पश्चिम बंगाल के चुने हुए अवतरण स्थानों में से 10 में 10946.9 2 टन (10%) की मात्रा दर्ज की गई।

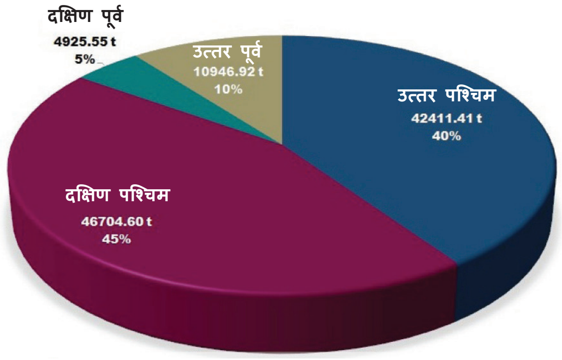

चित्र 3: नवंबर 2017 के दौरान दर्ज की गई क्षेत्र-वार अवतरण

उत्तर पश्चिम, दक्षिण पश्चिम और उत्तर पूर्व तटों में, पेलाजिक फिनफ़िश अवतरण अन्य 2 श्रेणियों से अधिक था जबकि दक्षिण पूर्व के अवतरण में शेलफिश संसाधनों (चित्र 4) का प्रभुत्व था।

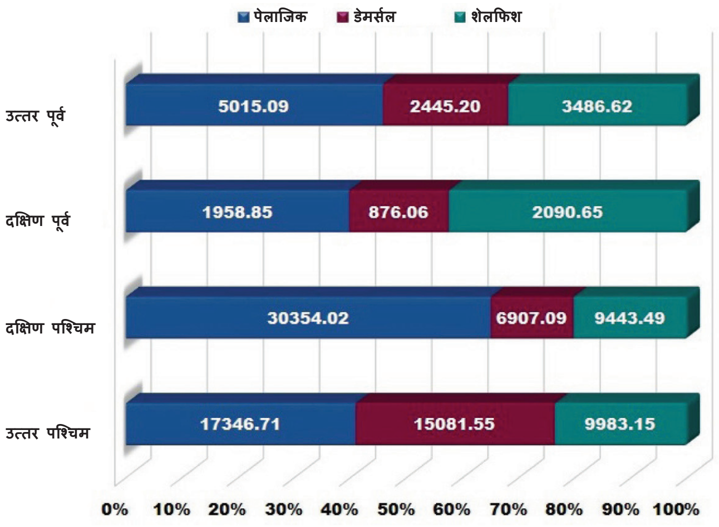

चित्र 4: प्रत्येक क्षेत्र की कुल अवतरण के लिए श्रेणीवार योगदान (टनों में) की तुलना

पाँच प्रमुख मत्स्यन मद जिसने प्रबलता से प्रत्येक क्षेत्र के अवतरण में योगदान दिया था, का विवरण तालिका 3 में दिया गया है।

तालिका 3. नवंबर 2017 के दौरान प्रत्येक क्षेत्र में प्रमुख वस्तुएं उतरां

मद	मात्रा टनों में	क्षेत्र का कुल अवतरण %
दक्षिण पश्चिम		
इंडियन ऑइल सरडीन	14501.30	31.05
इंडियन मैकरेल	4250.00	9.10
स्क्विड	3143.53	6.73
कट्टलफिश	2852.48	6.11
रिबन फिश	2313.53	4.95
उत्तर पश्चिम		
हॉर्स मैकरेल	6538.96	15.42
रिबन फिश	4512.71	10.64
कट्टलफिश	4150.42	9.79
जापानीस त्रेड फिन ब्रीम	3728.90	8.79
स्क्विड	2919.44	6.88
दक्षिण पश्चिम		
कट्टलफिश	453.50	9.21
रिबन फिश	429.20	8.71
ट्यूना	401.89	8.16
व्हाइट झींगा	303.30	6.16
ब्राउन श्रिम्प	284.36	5.77
उत्तर पूर्व		
क्रोकर	1431.43	13.08
करिक्काड़ी श्रिम्प	910.82	8.32
बॉम्बे डक	900.26	8.22
रिबन फिश	683.16	6.24
इंडियन मैकरेल	682.18	6.23

राज्य-वार अवतरण

महीने के दौरान भारत की मुख्य भूमि के साथ 9 समुद्री राज्यों में से गुजरात राज्य ने अधिकतम समुद्री मत्स्य अवतरण रिकार्ड किया था, जो 27,116.53 टन की कुल पकड़ (चित्र 5) के लगभग 26% था। गुजरात के बाद, सभी राज्यों में से कर्नाटक राज्य ने 24,826.29 टन योगदान दिया जो कुल योगदान का 24% था।

केरल 19, 994.85 टन (19%) के कुल अवतरण के साथ तीसरे स्थान पर रहा। पश्चिमी तट के राज्यों ने संयुक्त रूप से कुल पकड़ का 85% किया। पूर्वी तट में, 8,119.5 टन (8%) का सबसे ज्यादा अवतरण पश्चिम बंगाल से रिपोर्ट किया गया। महीने के दौरान न्यूनतम समुद्री अवतरण दर्ज करने वाला राज्य गोवा था जहां केवल 1,883.47 टन मत्स्य पकड़ दर्ज किया गया था।

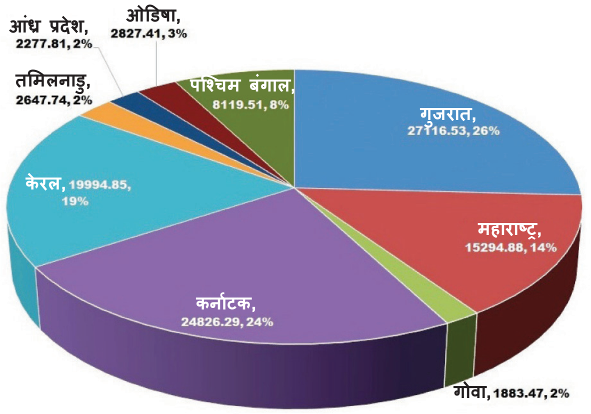

चित्र 5: नवंबर 2017 के दौरान राज्य-वार मत्स्य अवतरण (टनों में)

तालिका 4. नवंबर 2017 के
दौरान विभिन्न राज्यों में अवतरण किए गए प्रमुख मद

मद	मात्रा टनों में	राज्य का कुल अवतरण का %
केरल		
इंडियन ऑइल सार्डेन	3194.57	15.98
स्क्विड	1946.40	9.73
कट्टलफिश	1869.70	9.35
रिबन फिश	1405.65	7.03
स्नाप्पर	1276.44	6.38
कर्नाटक		
इंडियन ऑइल सार्डेन	10815.08	43.56
इंडियन मैकरेल	2681.13	10.80
डीप बोडीड	1670.00	6.73
सार्डिनेल्ला स्क्विड	1187.68	4.78
बुल्स आई–डस्की फिन्ड	1040.26	4.19
गोआ		
इंडियन मैकरेल	579.60	30.77
इंडियन ऑइल सरडीन	491.65	26.10
ट्यूना	290.15	15.41
हॉर्स मैकरेल	151.15	8.03
स्काड़	110.10	5.85
महाराष्ट्र		
इंडियन मैकरेल	6469.39	42.30
क्रोकर	1433.62	9.37
जापानीस त्रेड फिन ब्रीम	1076.90	7.04
बॉम्बे डक	928.93	6.07
रीफ़ कोड	659.66	4.31
गुजरात		
रिबन फिश	4008.00	14.78
कट्टलफिश	3923.00	14.47
स्क्विड	2749.00	10.14
जापानीस त्रेड फिन ब्रीम	2652.00	9.78
बुल्स आई- डस्की फिन्ड	2090.90	7.71
तमिल नाडु		
कट्टलफिश	424.27	16.02
स्क्विड	230.17	8.69
ट्यूना	187.50	7.08
इंडियन स्काड	132.21	4.99
इंडियन ऑइल सारडीन	118.43	4.47
आंध्र प्रदेश		
रिबन फिश	347.45	15.25
व्हाइट झींगा	255.11	11.20
ब्राउन श्रिम्प	156.96	10.71
ट्यूना	214.39	9.41
टैगर झींगा	1040.26	6.89
ओड़ीशा		
क्रोकर	655.35	23.18
रिबन फिश	292.56	10.35
करिक्काड़ी श्रिम्प	279.25	9.88
इंडियन मैकरेल	176.17	6.23
कैट फिश	141.58	5.01
पश्चिम बंगाल		
बॉम्बे डक	836.84	10.31
क्रोकर	776.08	9.56
करिक्काड़ी श्रिम्प	631.57	7.78
गभीर सागर श्रिम्प	513.13	6.32
इंडियन मैकरेल	506.02	6.23

पत्तन-वार अवतरण

महीने के दौरान पश्चिम और पूर्वी तटों के साथ चयनित बंदरगाहों में दर्ज किया गया मत्स्य अवतरण क्रमशः

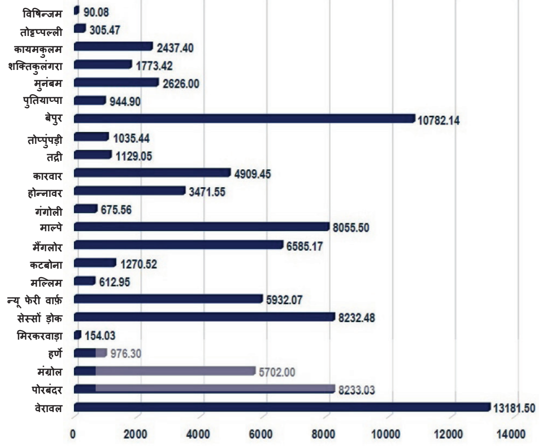

चित्र 6: नवंबर 2017 के दौरान पश्चिम तट के साथ बन्दरगाहों पर अवतरण (टनों में)

चित्र 6 और चित्र 7 में प्रस्तुत किया गया है। 47 बंदरगाहों में से, गुजरात के वेरावल बंदरगाह ने 13,181.50 टन (13%) का अधिकतम अवतरण और इसके बाद केरल के बेपोर बंदरगाह से 10,782.14 टन (10%) का योगदान रिकार्ड किया गया।

गुजरात के पोरबंदर बंदरगाह और महाराष्ट्र के ससून डॉक बंदरगाह ने लगभग 8,233 टन (8%) की मात्रा रिकार्ड की और अनुवर्ती स्थानों में रहे। पूर्वी तट के साथ, सबसे उच्चतम अवतरण रिकार्ड करने वाला बंदरगाह पश्चिम बंगाल के शंकरपुर था जहाँ 2,994.55 टन (3%) मद का अवतरण किया गया। पश्चिम तट के चयनित 23 बंदरगाहों में से 16 ने 1000 टन से अधिक पकड़ रिकार्ड की जबकि पूर्वी तट के केवल 4 बंदरगाहों ने 1,000 टन से अधिक रिकॉर्ड की गई थी। सबसे न्यूनतम अवतरण तमिलनाडु के चिन्नमुट्टम बंदरगाह(46.58 टन) से रिकार्ड की गई।

नाव आगमन के आधार पर अनुमान

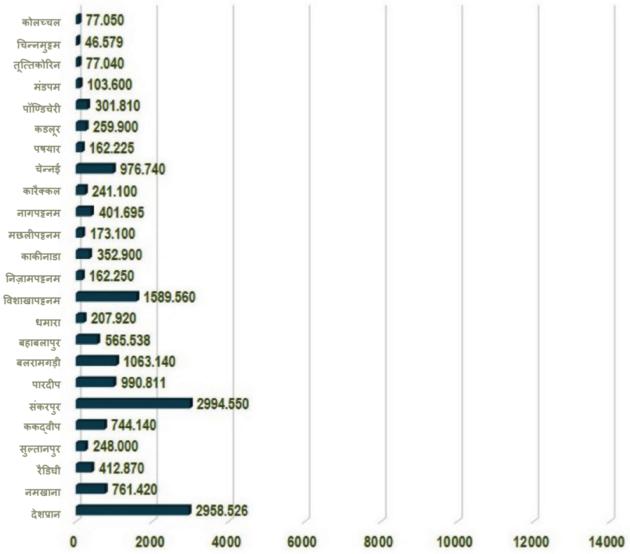

चित्र 7: नवंबर 2017 के दौरान पूर्वी तटके साथ बन्दरगाहों पर अवतरण (टनों में)

नवंबर 2017 के दौरान कुल 36,858 नाव आगमन रिकार्ड किए गए, सबसे ज्यादा यानि 4,745 नाव आगमन वेरावल बंदरगाहमें था। वेरावल के बाद पोरबंदर बंदरगाहमें 3,297 नावों का आगमन हुआ। इस अवधि के दौरान 47 बंदरगाहों में से केवल 11 में 1,000 नाव आगमन रिकार्ड किए गए, जिनका विवरण तालिका 5 में दिए गए हैं। मत्स्यन यानों के 82% से अधिक ने अपना पकड़ को ट्रौलर श्रेणी वालों के बंदरगाहोंमें अवतरण किया और शेष अवतरण पर्स सेनर्स, रिंग सेनर्स, गिल नेट्ट्स और पारंपरिक क्रैफ़्ट से किया गया।

तालिका 5. नवंबर 2017 के दौरान 1000 से अधिक नाव अवतरण रिकार्ड किए गए मत्स्यन पत्तन

क्रम सं.	मत्स्यन पत्तन	राज्य	नाव अवतरणों की संख्या
1	वेरावल	गुजरात	4745
2	पोरबंदर	गुजरात	3297
3	मंग्रोल	कर्नाटक	2543
4	मालपे	कर्नाटक	2102
5	सस्सों डॉक	महाराष्ट्र	1795
6	मंगलोर	कर्नाटक	1645
7	न्यू फेरी वार्फ	महाराष्ट्र	1312
8	हर्णे	महाराष्ट्र	1238
9	डिघा (शंकरपुर)	पश्चिम बंगाल	1151
10	देशप्राण	पश्चिम बंगाल	1139
11	शक्तिकुलंगरा	केरल	1007

तुलनात्मक विश्लेषण

तालिका 6 में पिछले महीनों के साथ नवंबर के आंकड़ों की तुलना दिखाई गई है। कुछ महीनों में मत्स्य पकड़ में बढ़ती प्रवृत्ति दिखाई गई है और अक्टूबर की तुलना में नवंबर में 2,000 टन से ज्यादा की वृद्धि हुई थी। कुल पकड़ में पेलाजिक फिनफिश पिछले महीने के समान प्रतिशत शेयर के साथ उच्च योगदानकर्ता बना रहा। डेमर्सल फिनफिश संसाधनों का हिस्सा 3% बढ़ गया, जिसके कारण शेलफिश अवतरण के प्रतिशत हिस्से में कमी दिखाई पड़ी। नवंबर के दौरान इंडियन ऑइल सरडीन सबसे ज्यादा योगदानकर्ता के रूप में रिकार्ड किया गया, जिसने भारतीय मैकेरल को दूसरे स्थान पर कर दिया। अवतरण में गुजरात राज्य सर्वोच्च स्थान पर जारी रहा और गुजरात के वेरावल बंदरगाह ने अधिकतम अवतरण रिकॉर्ड करके बंदरगाहों के बीच प्रमुख स्थान बनाए रखा। अक्टूबर की तुलना में नवंबर में रिकार्ड की गई नावों की कुल संख्या में 2,000 से अधिक की वृद्धि हुई है।

तालिका 6. आंकड़े का तुलनात्मक विश्लेषण

	सितंबर 2017	अक्तूबर 2017	नवंबर 2017
कुल पकड़	102013.55 t	102848.44 t	104988.48 t
पेलाजिक फिनफिश का अवतरण	46448.00 t (46%)	53123.87 t (52%)	54485.10 t (52%)
डेमर्सल फिनफिश का अवतरण	21374.27 t (21%)	22231.88 t (21%)	25499.46 t (24%)
शेलफिश का अवतरण	34191.28 t (33%)	27492.69 t (27%)	25003.91 t (24%)

सर्वोच्च रिकार्ड की गई मद	स्क्विड (14%)	इंडियन मैकरेल (13%)	इंडियन ऑइल सरडीन (15%)
सर्वोच्च अवतरण रिकार्ड किया गया राज्य	कर्नाटक (25%)	गुजरात (25%)	गुजरात (26%)
सर्वोच्च अवतरण रिकार्ड किया गया बंदरगाह	वेरावल (14%)	वेरावल (11%)	वेरावल (13%)
कुल नाव आगमन	32657	34623	36858

कुल पकड की प्रतिशत

संक्षेप

नवंबर 2017 में, भारत के 47 प्रमुख मत्स्यन अवतरण स्थानों में कुल 1,04,988.48 टन समुद्री मत्स्य संसाधनों का अवतरण किया गया, जिसमें पेलाजिक फिनफिश ने शेलफिश स्टॉक और डेमर्सल फिनफिश की तुलना में अधिक मात्रा में योगदान दिया। अवतरण की गई कुल मात्रा को ध्यान में रखते हुए, इंडियन ऑइल सरडीन प्रमुख मात्स्यिकी मद के रूप में रिकार्ड किया गया। कुल पकड़ के 85% से अधिक अवतरण पश्चिमी तट से किए गए और दक्षिण पश्चिम तट ने लगभग 45% के अधिकतम हिस्से का योगदान दिया। हालांकि, 9 समुद्र तटीय राज्यों में से सबसे ज्यादा पकड़ गुजरात ने रिकार्ड की। 47 चयनित बंदरगाहों में से 20 बंदरगाहों द्वारा 1000 टन से अधिक मत्स्य अवतरण रिकार्ड किया गया और वेरावल बंदरगाह द्वारा सर्वोच्च अवतरण के साथ-साथ अधिकतम नाव आगमन भी रिकार्ड किया गया।

दिसंबर 2017 के दौरान भारत के चयनित पत्तनों में समुद्री मत्स्य के अवतरण की मुख्य विशेषताएँ

आर बालसुब्रमानियन, वी. वी. अफ़सल, जोइस वी. तोमस
नेटफिश-एमपीईडीए

प्रस्तावना

भारत के तटीय राज्यों के कुछ चयनित पत्तनों और अवतरण केंद्रों पर होने वाले दैनिक नाव आगमन और समुद्री पकड़ अवतरण पर जानकारी प्राप्त करने के लिए नेटफिश आज्ञापत्रित है। दिसंबर 2017 के दौरान 46 प्रमुख अवतरण स्थान से एकत्र किए गए आंकड़ों का विश्लेषण किया गया और रिपोर्ट नीचे प्रस्तुत किया गया है।

कार्यप्रणाली

पत्तन आंकड़ा संग्रहणकर्ताओं द्वारा तटीय राज्यों के 46 चयनित अवतरण स्थानों के नाव आगमन के साथ-साथ कुल मत्स्य अवतरण की दैनिक रिकॉर्डिंग (तालिका 1) की गई थी। बंदरगाह में एक दिन में उतरे गए विभिन्न मत्स्य प्रजातियों की अनुमानित मात्रा का अनुमान देखकर किया गया। बंदरगाह पर पहुंचे मत्स्यन जहाजों का नाम, पंजीकरण संख्या और उसके प्रकार को भी रिकार्ड किया गया। इन आंकड़ों का आगे का विश्लेषण एमएस ऑफिस (एक्सेल) उपकरणों की सहायता से, प्रजाति वार, क्षेत्रवार, राज्यवार और बंदरगाह वार किया जाता है।

तालिका 1: डेटा संग्रह के लिए चयनित अवतरण केंद्र की सूची

क्रम सं.	राज्य	मत्स्यन बंदरगाह
1	केरल	बेपोर
2		पुतियाप्पा
3		तोप्पुंपड़ी
4		मुनंबम
5		शक्तिकुलंगरा
6		तोट्टप्पल्ली
7		तोट्टप्पल्ली
8		विषीन्जम
9	कर्नाटक	मैंगलोर
10		मालपे
11		गंगोली
12		तंद्री
13		कारवार
14		होन्नावर

15	महाराष्ट्र	हर्णे
16		न्यू फेरी वार्फ
17		रत्नागिरी (मिरकरवाड़ा)
18		सस्सों डॉक
19	गुजरात	वेरावल
20		पोरबंदर
21		मंगरोल
22	पश्चिम बंगाल	डिघा (शंकरपुर)
23		देशप्राण
24		नंखाना
25		सुल्तानपुर
26		ककद्वीप
27		राइडिगी
28	ओड़ीशा	पारादीप
29		बलरामगाड़ी
30		बहाबलापुर
31		धमारा
32	आंध्र प्रदेश	काक्किनाडा
33		मछलीपट्टिनम
34		निज़ांपट्टिनम
35		विशाखपट्टिनम
36	तमिल नाडु	चेन्नई
37		पषीयार
38		नागपट्टिनम
39		तूतिकोरिन
40		कडलूर
41		मंडपम
42		कोलाचल
43		पोण्डिच्चेरी
44		कारैक्कल
45	गोआ	चिन्नमुट्टम
46		कुटबोना
		मालिम

मत्स्य अवतरण पर आधारित अनुमान

दिसंबर 2017 में, 46 अवतरण स्थानों से कुल 82849.37 टन पकड़ दर्ज की गई। जिसमें पेलाजिक फिनफ़िश संसाधनों के 39,510.15 टन (48%), 23,492.34 टन (28%) डेमर्सल फिनफ़िश, 12,433.70 टन (15%) मॉलस्कैन थे।

महीने के दौरान मत्स्य मदों की 112 किस्मों का अवतरण दर्ज किया गया, जिनमें से क्रमवार उच्च पांच योगदानकर्ता इंडियन ऑइल सरडीन, भारतीय मैकेरल, रिबनफ़िश, स्क्विड और कटलफिश थे। इन पांच प्रजातियों ने कुल पकड़ का 41% (चित्र 2) बनाया। अवधि के दौरान अधिकतम लैंडिंग इंडियन ऑइल सरडीन प्रजाति ने दर्ज की थी और अवतरण 8,433.07 टन की थी, जो कुल पकड़ का 10% था। कुल पकड़ में उपर्युक्त सूचीबद्ध 5 मत्स्य मदों के अलावा,अन्य प्रमुख योगदानकर्ता क्रमश: 4,483.24 टन और 4,111.69 टन के हिस्से के साथ डस्की फिन्ड बुल्स आई और जापानी थ्रेडफिन ब्रेम थे। महीने के दौरान येलोफिन समुद्री ब्रीम प्रजाति की सबसे न्यूनतम मात्रा दर्ज की गई (0.08 टन)।

दिसंबर 2017 के दौरान विभिन्न मत्स्य मदों की श्रेणीवार मात्रा तालिका 2 में दी गई है। पेलाजिक फिनफ़िश संसाधनों में से, इंडियन ऑइल सरडीन ने सबसे ज्यादा लैंडिंग दर्ज की जिसके बाद भारतीय मैकेरल और रिबनफ़िश था। डेमर्सल फिनिश के मामले में, प्रमुख योगदानकर्ता बुल्स आई, जापानी थ्रेडफिन ब्रेम और क्रॉकर्स थे। शेलफिश के स्क्विड, कटलफिश और ऑक्टोपस सहित मॉलस्कैन लैंडिंग 63% था और शेष 37% क्रस्टेशियन थे। क्रस्टेशियनों में, प्रमुख योगदानकर्ता पीनिड श्रिम्प थे, जिसमें सबसे ज्यादा हिस्सा करिक्काड़ी श्रिम्प का था (2,033.09 टन)।

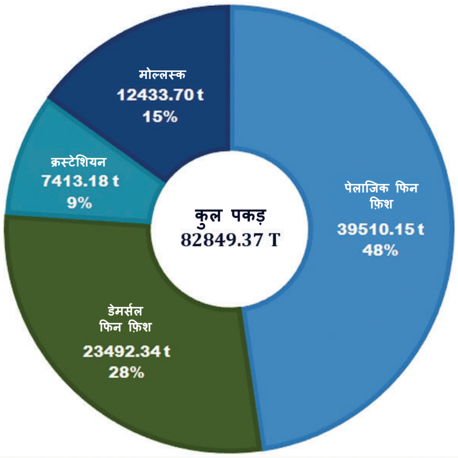

चित्र 1: दिसंबर 2017 के दौरान मद-वार मत्स्य अवतरण

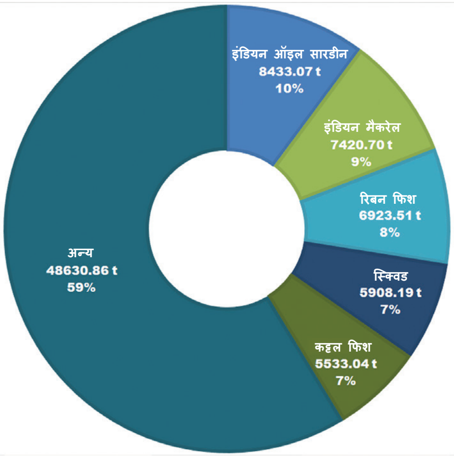

चित्र 2: दिसंबर 2017 के दौरान अवतरण की गई प्रमुख मदें

तालिका 2: दिसंबर 2017 के दौरान विभिन्न मत्स्य मदों का श्रेणीवार अवतरण

मत्स्य मद	मात्रा टनों में	कुल पकड़ %
पेलाजिक फिनफिश		
इंडियन ऑइल सरडीन	8433.07	10.18
इंडियन मकरेल	7420.70	8.96
रिबन फिश	6923.51	8.36
ट्यूना	3860.15	4.66
एंचोवी	2189.36	2.64
सीर फिश	1719.63	2.08
स्काड	1442.27	1.74
होर्स मैकरल	1378.08	1.66
डोलफ़िन फिश	1341.32	1.62
बॉम्बे डक	1064.42	1.28
लेस्सर सारडीन	987.50	1.19
बर्राकुड़ा	606.31	0.73
ट्रेवल्लिएस	518.75	0.63
हेरिंग्स	335.72	0.41
लेयथर जाकेट	324.61	0.39
क्वीन फिश	310.37	0.37
हिल्सा	91.81	0.11
मुल्लेट	89.49	0.11
मारलिन्स	87.06	0.11
ओरियंटल मोनिटो	68.90	0.08
कोबिया	52.30	0.06
सेईल फिश	52.00	0.06
नीडिल फिश	50.10	0.06
इंडियन इलिशा	44.79	0.05
फ्लाट नीडिल फिश	41.06	0.05
सीबास	26.48	0.03
रईनबो रन्नर	23.69	0.03
इंडियन सालमन	17.92	0.02
सिल्वर सिल्लागों	7.40	0.01
इंडियन त्रेड फिश	0.93	0.00
मिल्क फिश	0.37	0.00
लेडी फिश	0.10	0.00
कुल पिलाजिक	**39510.15**	**47.69**
डेमेर्सल फिनफिश		
बुल्स आई	6022.62	7.27
जापानीस त्रेड फिन ब्रेम	4111.69	4.96
क्रोकर्स	3523.51	4.25
रीफ़ कोड्स	2104.33	2.54
सोल फिश	2001.21	2.42
लिजार्ड फिश	1782.94	2.15
कैट फिश	1499.22	1.81
पोंफ्रेट	873.52	1.05
स्नैप्पर	622.06	0.75
गोट फिश	247.15	0.30
ईल	172.39	0.21
मून फिश	165.57	0.20
पोनी फिश	155.08	0.19
रेय	81.77	0.10
टैगर पेर्च	45.00	0.05
इंडियन हलिबट	22.43	0.03
घोल	21.00	0.03
फायल फिश	10.04	0.01
एम्परर ब्रेम	8.97	0.01
विप फिन सिल्वर बिडडी	7.53	0.01
ग्लास्सी पेर्च	5.76	0.01
पैरट फिश	5.10	0.01
ब्लैक टिप शार्क	2.99	0.00
स्पाईन फूट	0.25	0.00
इंडियन ड्रीफ्ट फिश	0.15	0.00
येल्लोफिन सी ब्रेम	0.08	0.00
कुल डेरमिसल	**23492.34**	**28.36**
शेल फिश		
क्रस्टेशियन		
पीनिड श्रिम्प	6770.98	8.17
समुद्री केकड़ा	604.51	0.73
कीचड़ केकड़ा	19.00	0.02
लॉब्स्टर	15.17	0.02
गैर पीनिड श्रिम्प	3.51	0.00

संकेंद्रित क्षेत्र

कुल क्रस्टेशियण	***7413.18***	***8.95***
मोलस्क		
स्क्विड	5908.19	7.13
कट्टल फिश	5533.04	6.68
ओक्टोपस	992.47	1.20
कुल मोलस्क	***12433.70***	***15.01***
कुल शेलफिश	***19846.87***	***23.96***
कुल योग	**82849.37**	**100.00**

क्षेत्र-वार लैंडिंग

लैंडिंग डेटा का क्षेत्र वार मूल्यांकन करने पर,यह पाया गया कि उत्तर पश्चिम क्षेत्र (महाराष्ट्र और गुजरात तटों में 7 चयनित लैंडिंग स्थान सहित) ने 37,520.41 टन की अधिकतम मात्रा पंजीकृत की और इसके बाद में 30,458.31 टन के साथ दक्षिण पश्चिम तट द्वारा (केरल, कर्नाटक और गोवा के 15 चयनित बंदरगाह सहित) दर्ज की (चित्र 3)।

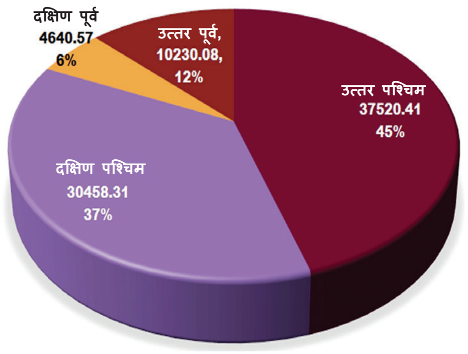

चित्र 3 : दिसंबर 2017 के दौरान दर्ज की गई क्षेत्र-वार अवतरण

तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के 13 बंदरगाहों की लैंडिंग ने दक्षिण पूर्व क्षेत्र का पकड़ आकडा बनाया, जहां कुल मात्रा 4,640.57 टन (कुल पकड़ का केवल 6%) दर्ज किया गया। उत्तर पूर्व क्षेत्र में ओडिशा और पश्चिम बंगाल के चुने गए लैंडिंग स्थानों में से 10 में 10,230.08 टन (12%) की मात्रा दर्ज की गई।

दक्षिण पश्चिम और उत्तरी पूर्व तटों में, अन्य 2 श्रेणियों की तुलना में पेलाजिक फिनिश लैंडिंग काफी अधिक थी, जबकि उत्तर पश्चिम में डेमर्सल फिनफिश स्टॉक पेलाजिक फिनिश और शेलफिश की तुलना में मात्रा में अधिक

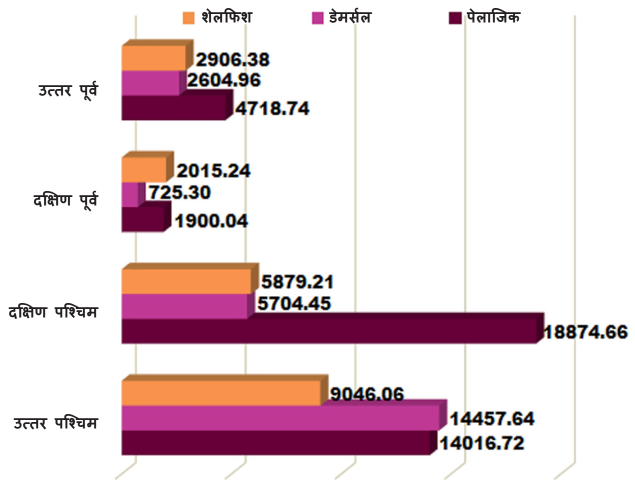

चित्र 4: प्रत्येक क्षेत्र की कुल अवतरण के लिए श्रेणीवार योगदान (टनों में) की तुलना

दर्ज किया गया (चित्र 4)। दक्षिण पूर्व में, लैंडिंग में शेलफिश संसाधनों का प्रभुत्व था। उत्तरी पश्चिम को छोड़कर सभी क्षेत्रों में डेमर्सल फिनफिश लैंडिंग सबसे कम थी।

पांच प्रमुख मात्स्यिकी मदों ने प्रत्येक क्षेत्र में से लैंडिंग में मुख्य रूप में योगदान दिया था, जिसका विवरण तालिका 3 में दिया गया है।

तालिका 3. दिसंबर 2017 के दौरान प्रत्येक क्षेत्र में अवतरण किए गए प्रमुख मद

मद	**मात्रा टनों में**	**क्षेत्र का कुल लैंडिंग%**
दक्षिण पश्चिम		
इंडियन ऑइल सरडीन	7266.81	23.86
इंडियन मैकेरल	3279.51	10.77
स्क्विड़	2270.34	7.45
रिबन फिश	1418.30	4.66
कट्टल फिश	1171.74	3.85
उत्तर पश्चिम		
रिबन फिश	4303.74	11.47
कट्टल फिश	3643.97	9.71

डस्की फिन्ड बुल्स आई	3494.60	9.31
इंडियन मैकेरल	3441.72	9.17
स्क्विड़	3125.15	8.33
दक्षिण पूर्व		
ट्यूना	494.40	10.65
रिबन फिश	463.04	9.98
कट्टल फिश	430.86	9.28
ब्राउन श्रिम्प	288.00	6.21
व्हाइट प्रोन	263.30	5.67
उत्तर पूर्व		
क्रोकर	1299.67	12.70
इंडियन ऑइल सरडीन	816.61	7.98
रिबन फिश	738.43	7.22
गोल्डेन एंचोवी	719.80	7.04
कारिक्काड़ी श्रिम्प	676.90	6.62

राज्य-वार अवतरण

भारत की मुख्य भूमि के 9 समुद्र तटीय राज्यों में से, गुजरात राज्य ने महीने के दौरान अधिकतम समुद्री मत्स्य लैंडिंग दर्ज की थी, जो 25,254.28 टन की कुल पकड़ (चित्र 5) के 30% से अधिक था। गुजरात के बाद, कर्नाटक राज्य ने 16,493.81 टन का योगदान दिया जो सभी राज्यों से दर्ज कुल मात्रा का लगभग 20% था। 12,266.13 टन (15%) की कुल लैंडिंग के साथ महाराष्ट्र तीसरे स्थान पर रहा। पश्चिमी तट ने संयुक्त रूप से कुल पकड़ का 82% से अधिक बनाया। पूर्वी तट में 7,239.78 टन (9%) की सबसे ज्यादा लैंडिंग की सूचना पश्चिम बंगाल से मिली। महीने के दौरान गोआ ने केवल 1,840.72 टन समुद्री मत्स्य की सबसे न्यूनतम लैंडिंग दर्ज की।

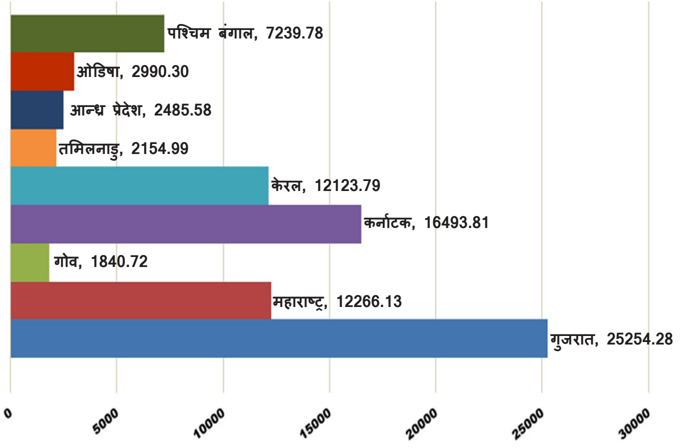

चित्र 5: दिसंबर 2017 के दौरान की गई राज्यवार मत्स्य अवतरण (टनों में)

दिसंबर 2017 के दौरान प्रत्येक राज्य में पांच मात्स्यिकी मदों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है, इसका विवरण तालिका 4 में दिया गया है।

तालिका 4. दिसंबर 2017 के दौरान विभिन्न राज्यों में अवतरण की गई प्रमुख मदें

मद	मात्रा टनों में	राज्य में कुल अवतरण का %
केरल		
इंडियन ऑइल सरडीन	1921.01	15.84
स्क्विड़	1151.62	9.50
जापानीस त्रेड फिन ब्रेम	922.60	7.61
रिबन फिश	863.10	7.12
कट्टल फिश	841.18	6.94
कर्नाटक		
इंडियन ऑइल सारडीन	4396.10	26.65
इंडियन मैकरेल	2188.06	13.27
स्क्विड़	1105.72	6.70
लिटल टन्नी	819.83	4.97
इंडियन स्काड	787.41	4.77
गोआ		
इंडियन ऑइल सारडीन	949.70	51.59
इंडियन मैकरेल	363.53	19.75
लिटिल टन्नी	167.95	9.12
ट्यूना	95.00	5.16

हॉर्स मैकरेल	49.90	2.71
महाराष्ट्र		
इंडियन मैकरेल	2865.42	23.36
रिबन फिश	932.24	7.60
क्रोकर	906.82	7.39
कट्टल फिश	862.47	7.03
हॉर्स मैकरेल	744.14	6.07
गुजरात		
डस्की फिंड बुल्स आई	3494.60	13.84
रिबन फिश	3371.50	13.35
कट्टल फिश	2781.50	11.01
स्क्विड़	2654.00	10.51
जापानीस त्रेड फिन ब्रेम	2313.00	9.16
तमिल नाडु		
कट्टल फिश	394.19	18.29
स्क्विड़	188.73	8.76
ट्यूना	182.15	8.45
इंडियन ऑइल सारडीन	87.41	4.06
इंडियन मैकरेल	86.96	4.04
आंध्र प्रदेश		
रिबन फिश	391.00	15.73
ट्यूना	312.25	12.56
ब्राउन श्रिम्प	252.77	10.17
व्हाइट प्रोन	217.58	8.75
पिंक श्रिम्प	199.82	8.04
ओड़ीशा		
क्रोकर	614.10	20.54
रिबन फिश	335.55	11.22
गोल्डेन एंचोवी	251.60	8.41
कारिक्काड़ी श्रिम्प	247.70	8.28
सोल फिश	153.71	5.14
पश्चिम बंगाल		
इंडियन ऑइल सारडीन	717.50	9.91
क्रोकर	685.57	9.47
बॉम्बे डक	557.78	7.70
गोल्डेन एंचोवी	468.20	6.47
इंडियन मैकरेल	449.04	6.20

हार्बर वार लैंडिंग

महीने के दौरान पश्चिम और पूर्वी तटों के साथ चयनित बंदरगाहों में दर्ज की गई मत्स्य की लैंडिंग क्रमशः 6 और 7 के आंकडों में प्रस्तुत की जाती है। 46 बंदरगाहों में से, गुजरात के वेरावल बंदरगाह ने 10,625.40 टन (13%) की अधिकतम लैंडिंग दर्ज की और इसके बाद गुजरात के पोरबंदर बंदरगाह ने 8,917.88 टन (11%) का योगदान दर्ज किया। कर्नाटक के मालपे बंदरगाह ने मात्रा में 7,351.60 टन (9%) दर्ज किया और इसके बाद केरल के बेयपोर बंदरगाह ने 6,907.10 टन (8%) की मात्रा के साथ आगमी स्थान दर्ज किया। पूर्वी तट के साथ, सबसे ज्यादा लैंडिंग दर्ज करने वाला बंदरगाह पश्चिम बंगाल का दीघा (शंकरपुर) था जहां 3,299.66 टन (4%) लैंडिंग किया गया। पश्चिम तट के चयनित 23 बंदरगाहों में से तेरह ने 1000 टन से अधिक पकड़ दर्ज की जबकि पूर्वी तट के 23 बंदरगाहों में से केवल 4 में 1000 टन से अधिक दर्ज किया गया। तमिलनाडु में कोलच्चल बंदरगाह में (13.75 टन) का सबसे न्यूनतम लैंडिंग दर्ज किया गया।

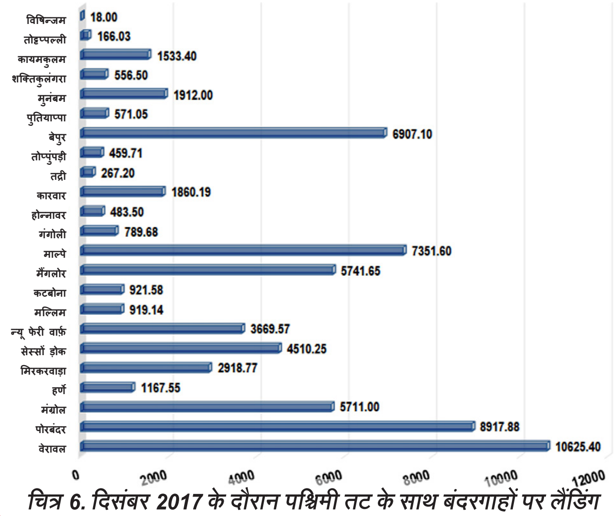

चित्र 6. दिसंबर 2017 के दौरान पश्चिमी तट के साथ बंदरगाहों पर लैंडिंग (टन में)

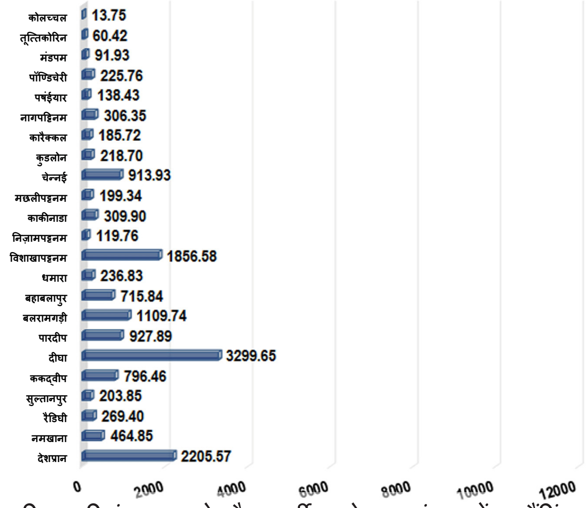

चित्र 7. दिसंबर 2017 के दौरान पूर्वी तट के साथ बंदरगाहों पर लैंडिंग (टन में)

नाव आगमन पर आधारित अनुमान

दिसंबर 2017 के दौरान कुल 32,115 नाव आगमन दर्ज किए गए, जिनमें से सबसे ज्यादा 4,687 नाव आगमन वेरावल बंदरगाह से था। वेरावल के बाद पोरबंदर बंदरगाह था, जहां 3,178 नावों का आगमन हुआ था। इस अवधि के दौरान 46 बंदरगाहों में से केवल 8 ने 1000 से अधिक नाव आगमन दर्ज किया था, जिसके विवरण तालिका 5 में दिए गए हैं। मत्स्यन यानों के 76% से अधिक ने बंदरगाहों पर अपनी पकड़ का अवतरण किया जो, ट्रैवलर्स की श्रेणी से संबंधित थे और शेष लैंडिंग पर्स सेनर्स, रिंग सेनर्स, गिलनेटर्स और पारंपरिक क्राफ्ट के थे।

तालिका 5. दिसंबर 2017 के दौरान 1000 नाव लैंडिंग दर्ज की गई मत्स्यन बंदरगाह

क्रम सं.	मत्स्यन बंदरगाह	राज्य	नाव लैंडिंग की संख्या
1	वेरावल	गुजरात	4687
2	पोरबंदर	गुजरात	3178
3	मंगरोल	गुजरात	2478
4	मालपे	कर्नाटक	2212
5	सस्सों डक	महाराष्ट्र	1263
6	मैंगलोर	कर्नाटक	1225
7	हारने	महाराष्ट्र	1090
8	डिघा (शंकरपुर)	पश्चिम बंगाल	1060

तुलनात्मक विश्लेषण

तालिका 6 में पिछले महीनों के साथ दिसंबर 2017 के आंकड़ों की तुलना दिखाया गयी है। नवंबर 2017 की तुलना में दिसंबर 2017 के दौरान कुल मत्स्य पकड़ में 22,000 टन तक गिरावट हुई थी। पेलैजिक फिनफिश शेयर प्रतिशत में मामूली कमी के साथ कुल पकड़ में शीर्ष योगदानकर्ता के रूप में जारी रहा। डेमर्सल फिनफिश संसाधनों का हिस्सा 4% बढ़ गया था जबकि शेलफिश लैंडिंग का प्रतिशत हिस्सा वही बना रहा। चालू अवधि के दौरान इंडियन ऑइल सरडीन उच्चतम योगदानकर्ता के रूप में जारी रहा। लैंडिंग के मामले में गुजरात राज्य उच्च स्थान पर रहा और गुजरात के वेरावल बंदरगाह ने अधिकतम लैंडिंग रिकॉर्ड करके बंदरगाहों के बीच प्रमुख स्थान बनाया रखा। दिसंबर 2017 में रिकॉर्ड किया गया कुल आगमन नवंबर 2017 की तुलना में 4,700 कम था।

तालिका 6. आंकड़े का तुलनात्मक विश्लेषण

	अक्तूबर 2017	नवंबर 2017	दिसंबर 2017
कुल पकड़	**1,02,848.44 t**	**1,04,988.48 t**	**82,849.37 t**
पेलाजिक फिनफिश की लैंडिंग	53,123.87 t (52%)	54,485.10 t (52%)	39,510.15 t (48%)
डेमेर्सल फिनफिश का लैंडिंग	22,231.88 t (21%)	25,499.46 t (24%)	23,492.34 t (28%)
शेलफिश का लैंडिंग	27,492.69 t (27%)	25,003.91 t (24%)	19,846.87 t (24%)
सबसे ज़्यादा लैंडिंग रिकार्ड किए गए प्रजाति	इंडियन मैकरेल (13%)	इंडियन ऑइल सारडीन (15%)	इंडियन ऑइल सारडीन (10%)
सबसे ज़्यादा लैंडिंग रिकार्ड किया गया राज्य	गुजरात (25%)	गुजरात (26%)	गुजरात (30%)
सबसे ज़्यादा लैंडिंग रिकार्ड किया गया बंदरगाह	वेरावल (11%)	वेरावल (13%)	वेरावल (13%)
कुल नाव आगमन	**34,623**	**36,858**	**32,115**

**कुल पकड़ का प्रतिशत*

सारांश

दिसंबर 2017 में, भारत के 46 प्रमुख मत्स्य लैंडिंग स्थानों में से 82,849.37 टन समुद्री मत्स्य संसाधनों की कुल लैंडिंग दर्ज की गई, जिसमें अधिक मात्रा में योगदान शेलफिश स्टॉक और डेमर्सल फिनफिश की तुलना में पेलाजिक फिनफिश ने किया। अवतरण किए गए कुल मात्रा में से प्रमुख मत्स्य वस्तु के रूप में इंडियन ऑइल सरडीन को दर्ज किया गया। पश्चिमी तट से लैंडिंग ने कुल मिलाकर कुल पकड़ के 85% से अधिक का योगदान दिया और उत्तर पश्चिम तट ने लगभग 45% के अधिकतम हिस्से का योगदान दिया। 9 समुद्री राज्यों में सबसे ज्यादा पकड़ गुजरात राज्य ने दर्ज की। 46 चयनित बंदरगाहों में से 13 बंदरगाहों ने 1000 टन से अधिक मत्स्य लैंडिंग दर्ज की और वेरावल बंदरगाह ने सबसे अधिक लैंडिंग के साथ-साथ अधिकतम नाव आगमन भी दर्ज किया।

कर्नाटक मत्स्य मेला 2017 में एमपीईडीए की भागीदारी

श्री प्रमोध माधवराज, मात्स्यिकी मंत्री, कर्नाटक और श्री एच.एस. वीरप्पा गौड़ा, मात्स्यिकी निदेशक, कर्नाटक एमपीईडीए स्टॉल का संदर्शन करते हुए

कर्नाटक सरकार के मत्स्यपालन विभाग द्वारा बंगलुरु के श्री कांटीरवा स्टेडियम में प्रमुख मात्स्यिकी कार्यक्रम 'कर्नाटक मत्स्य मेला 2017' का आयोजन किया गया। इस चार दिवसीय मत्स्य मेला का उद्घाटन कर्नाटक के मात्स्यिकी मंत्री श्री प्रमोध माधवराज ने किया और श्री एच एस वीरप्पा गौड़ा, मात्स्यिकी निदेशक, कर्नाटक ने समारोह की अध्यक्षता की। कार्यक्रम में मात्स्यिकी विभाग, कर्नाटक के अधिकारी भी मौजूद थे।

> मात्स्यिकी क्षेत्र में अधिक निवेश को आकर्षित करने के लिए कर्नाटक मात्स्यिकी विभाग द्वारा आयोजित यह दूसरा मत्स्य मेला था

मात्स्यिकी क्षेत्र में अधिक निवेश को आकर्षित करने के लिए कर्नाटक मात्स्यिकी विभाग द्वारा आयोजित यह दूसरा मत्स्य मेला था। सबसे तेज़ी से बढ़ रहे खाद्य उत्पादन प्रणालियों के साथ राज्य में मात्स्यकी और जलकृषि एक महत्वपूर्ण स्थिति में है।

इस कार्यक्रम में प्रदर्शकों और पूरे देश से हितधारकों ने बडी तादाद में भाग लिया और 50,000 से अधिक लोगों ने इस मेले का संदर्शन किया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण आलंकारिक मत्स्य गैलरी, आलंकारिक मत्स्य प्रतियोगिताएं, खाने के लिए तैयार मत्स्य मदें, मछलीघर सामान, सूचनात्मक थीम क्षेत्र, स्वादिष्ट फुडकोर्ट, मत्स्य की पाक विधि प्रतियोगिताएं, जीवित मत्स्य की बिक्री, आलंकारिक मत्स्य बिक्री, समुद्री शैल प्रदर्शनी इत्यादि थे।

एमपीईडीए स्टॉल में मूल्यवर्धित उत्पादों, वाणिज्यिक रूप से महत्वपूर्ण श्रिम्प, केकड़ा, सेफलोपोड्स, मत्स्य के बैनर और गोवा में आईआईएसएस -2018 पर केंद्रित एक बैनर बक्ड्रोप के रूप में प्रदर्शित किए गए। आईआईएसएस-2018 से संबंधित कई पूछताछ प्राप्त हुई, एमपीईडीए ने प्रतिनिधियों को पंजीकरण फॉर्म जारी किए। एमपीईडीए ने एक मछलीघर टैंक प्रदर्शित किया और यह जनता के लिए आकर्षण का केंद्र था। एमपीईडीए स्टॉल के साथ, सेंट्रल इनलैंड मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीआईएफआरआई), केंद्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईएफटी), कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय (यूएएस), बंगलुरु, केंद्रीय मीठा पानी जलकृषि (सीआईएफए), कर्नाटक मत्स्य विकास निगम (केएफडीसी) और और पशुपालन और मात्स्यिकी विभाग, कर्नाटक ने भी मत्स्य मेला में अपने स्टालों की व्यवस्था की।

श्री प्रमोद माधवराज, मात्स्यिकी मंत्री, कर्नाटक, सीआईएफआरआई के निदेशक, कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक, मात्स्यिकी कॉलेज, मांगलोर के प्रोफेसरों, मंगलौर राज्य मात्स्यिकी विभाग के अधिकारियों और अन्य हितधारकों ने एमपीईडीए स्टॉल का संदर्शन किया।

आयोजकों द्वारा जलकृषि किसानों और आलंकारिक मत्स्य किसानों के लिए क्षेत्रीय भाषा में तकनीकी सत्र की भी व्यवस्था की गई थी। मेले के आयोजन के चार दिनों में कर्नाटक के विभिन्न पारंपरिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

कार्यक्रम का समापन समारोह मात्स्यिकी निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया और प्रतिभागियों को भागीदारी प्रमाणपत्र और स्मृति चिन्ह भी वितरित किए गए।

www.mpeda.gov.in

There's no seafood as Irresistible as Indian Seafood

From the sparkling Indian seas comes the finest seafood in the world. Enjoy it in abundance throughout the year.

You haven't tasted the best seafood, if you haven't tasted Indian seafood.

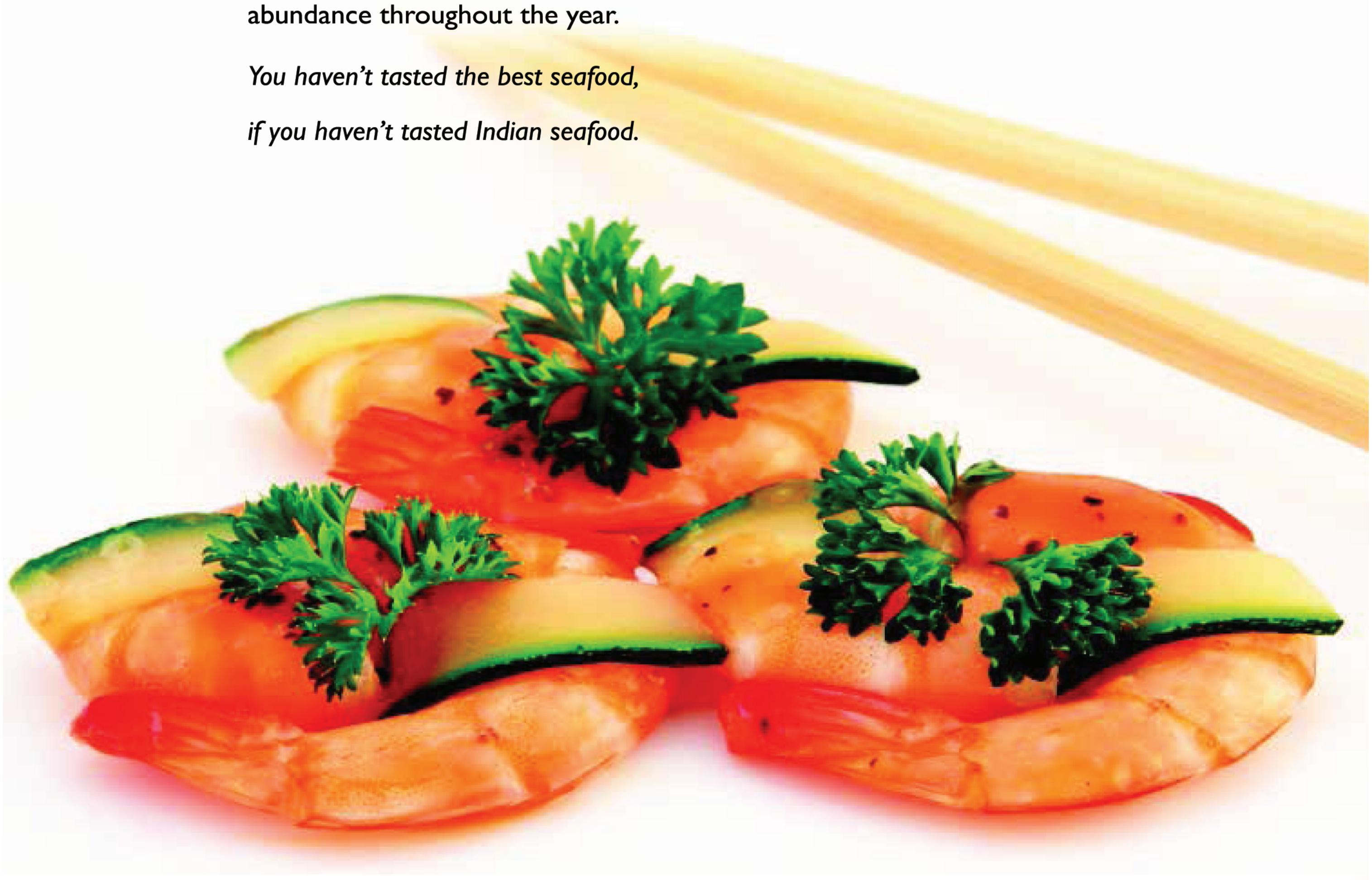

The Marine Products Export Development Authority

(Ministry of Commerce & Industry, Government of India)

MPEDA House, Panampilly Avenue, Kochi - 682 036, Kerala, India

Phone: +91 484 2311979 Fax: +91 484 2313361 E-mail: ho@mpeda.gov.in

एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग वलसाड द्वारा आयोजित पर्यावरणानुकूल एवं चिरस्थाई श्रिम्प कृषि पर प्रशिक्षण

सूरत में प्रशिक्षण कार्यक्रम

एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग, वलसाड द्वारा सचिन सामुदायिक हॉल, सूरत में पर्यावरणानुकूल, एवं चिरस्थाई श्रिम्प कृषि पर एक पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण सूरत जिले के तटवर्ती गाँवों में श्रिम्प कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में 2-6 जनवरी, 2018 के दौरान 101 लोगों ने भाग लिया।

श्री यू के पांड्य, सहायक निदेशक ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और श्रिम्प कृषि के विकास में एमपीईडीए की भूमिका के बारे में व्याख्या की। श्री भविन एम. घेरवारा, फील्ड पर्यवेक्षक ने श्रिम्प की पहचान और इसके जीवन चक्र और तालाब की तैयारी पर व्याख्यान दिया।

श्री मारुति डी. यलिगर, उप निदेशक आहु, सूरत के फील्ड संदर्शन के दौरान कक्षा लेते हुए

दूसरे दिन, श्री रजाक अली, सहायक निदेशक ने स्थल चयन और फार्म निर्माण पर व्याख्यान दिया। श्री एम ए पाटिल, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने बीज चयन, पैकिंग, परिवहन, वायुजलानुकूलन, भंडारण और जल की गुणवत्ता प्रबंधन पर चर्चा की। श्री मारुति डी. यलीगर, उप निदेशक ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया।

तीसरे दिन, श्री यलिगर ने बीमारियों की रोकथाम और नियंत्रण पर व्याख्यान दिया। पट्टे पर भूमि नीति, श्रिम्प कृषि के विस्तारण के लिए भूमि के आबंटन हेतु जिलाधीश/मात्स्यिकी विभाग को आवेदन प्रस्तुत करने की प्रक्रिया, प्रो-बायोटिक का उपयोग, एंटीबायोटिक्स का दुरुपयोग, फसल, फसल पूर्व प्रबंधन, विपणन और जलकृषि में एचएसीसीपी आदि पर श्री पांड्य और श्री घेरवारा ने चर्चा की।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के चौथे दिन, श्री यलिगर और श्री घेरवारा के साथ, सुल्तानबाद गाँव के अहू में श्री रोहनभाई पटेल के श्रिम्प फार्म के दौरे के लिए प्रशिक्षुओं को ले जाया गया। व्यावहारिक पहलुओं में फार्म निर्माण, प्रबंधन, जैव सुरक्षा उपायों, बेहत्तर प्रबंधन प्रथाओं और विभिन्न जल गुणवत्ता

श्री मारुति डी. यलिगर, उप निदेशक प्रशिक्षकों को प्रमाणपत्र वितरित करते हुए

मानकों के परीक्षण के लिए फील्ड उपकरण का उपयोग के बारे में प्रशिक्षुओं को समझाया गया। श्री सुकेतु, प्रभारी फार्म अधिकारी ने अपने अनुभव और प्रशिक्षुओं के लिए वन्नामी श्रिम्प कृषि की विधि के बारे में व्याख्या की।

समापन सत्र में, श्री यालिगर ने जलकृषि प्राधिकरण के दिशानिर्देशों और लाइसेंस के लिए आवेदन करने की तरीके पर व्याख्यान दिया। श्री पांड्य ने एल. वन्नामी कृषि और जैव सुरक्षा उपायों पर व्याख्यान दिया। श्री घेरवारा ने जलकृषि के विविधीकरण के बारे में बात की और प्रशिक्षुओं के लिए परीक्षा आयोजित की।

समापन समारोह में श्री पांड्य द्वारा प्रतिभागियों और आमंत्रितों का स्वागत किया गया। श्री यालिगर ने 101 प्रशिक्षुओं को प्रमाणपत्र वितरित किए और समापन समारोह में अपना भाषण दिया। श्री घेरवारा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

नवसरी में प्रशिक्षण कार्यक्रम

एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग, वलसाड द्वारा श्री महाकाली माता मंदिर सेवा समिति हाल, मसा में पर्यावरणानुकूल, एवं चिरस्थाई श्रिम्प कृषि पर एक पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

श्री मारुति डी. यलिगर, उप निदेशक ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने प्रशिक्षुओं से नियमित रूप से प्रशिक्षण में भाग लेने का अनुरोध किया। श्री यू के पांड्य, सहायक निदेशक ने पर्यावराणानुकूल और चिरस्थाई श्रिम्प कृषि और गुजरात में विशेष रूप से नवसारी जिले में इसकी वर्तमान स्थिति पर चर्चा की। श्री भविन एम. घेरवारा ने श्रिम्प की पहचान और जीवन चक्र और तालाब की तैयारी के बारे में विस्तार से बताया।

दूसरे दिन, श्री रजाक अली ने स्थल चयन और फार्म निर्माण के बारे में बताया। श्रीमती एम ए पाटिल, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने जल गुणवत्ता प्रबंधन, चयन, पैकिंग, परिवहन, बीज और भंडारण के वायुजलानुकूलन के बारे में समझाया।

पनर गाँव के श्री नीलेश भाई के फार्म का संदर्शन

प्रशिक्षण कार्यक्रम के तीसरे दिन, श्री पांड्य और श्री घेरवारा ने चारा प्रबंधन, दैनिक निगरानी, जल गुणवत्ता प्रबंधन, रोगों की रोकथाम और नियंत्रण, पैदावार, फसलोत्तर प्रबंधन और विपणन पर व्याख्यान दिए। उन्होंने जलकृषि में एचएसीसीपी की भूमिका, जलकृषि में एंटीबायोटिक दवाओं का दुरुपयोग, फसल-पूर्व परीक्षण, पैदावार और पट्टे पर भूमि नीति का महत्व, एल. वन्नामी और पी. मोनोडन के अंतर, एल. वन्नामी कृषि, जैव-सुरक्षा के महत्व और एल. वन्नामी में ईटीएस आवश्यकताओं के बारे में भी समझाया।

चौथे दिन, श्री यालिगार और श्री घेरावरा ने प्रशिक्षुओं के साथ नवसारी जिले के पानार गांव में श्री नीलेश भाई के फार्म का दौरा किया। श्री नीलेश ने फार्म निर्माण और प्रबंधन, जैव-सुरक्षा उपायों, बेहत्तर प्रबंधन प्रथाओं और विभिन्न प्रकार के जल/मिट्टी गुणवत्ता मानकों के परीक्षण हेतु फील्ड उपकरण के उपयोग के व्यावहारिक पहलुओं के बारे में समझाया। एक श्रिम्प कृषक श्री अमित पटेल ने श्रिम्प कृषि और फार्म में अपनाई जाने वाली कृषि प्रथाओं में अपने अनुभव को व्यक्त किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम दिन, श्री पंड्या ने जलकृषि प्राधिकरण के दिशानिर्देश और सीएए लाइसेंस के आवेदन के लिए आवश्यक प्रक्रिया पर व्याख्यान दिया। श्री घेवरा ने जलकृषि के विविधीकरण के महत्व पर चर्चा की। अंतिम दिन एक परीक्षा आयोजित की गई, जिसके बाद हुई चर्चा में प्रतिभागियों द्वारा उठाए गए संदेहों को अधिकारियों द्वारा स्पष्टीकरण दिया गया।

समापन समारोह में श्री यालिगर ने 152 प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र वितरित किए। समापन समारोह में श्री पंड्या ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा द्वारा गुंटूर के राजबंगरू पालम में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

गुंटूर के राजबंगरू पालम गाँव, चिन्नगंजम मंडल, प्रकाशम जिले में श्रिम्प कृषि में बेहतर प्रबंधन और जलकृषि में विविधता पर एक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 13-15, 2017 तक एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा द्वारा किया गया। प्रशिक्षण में 20 कृषको ने भाग लिया।

श्री अर्चिमान लाहिड़ी, उप निदेशक राजबंगरू पालम में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान कक्षा का संचालन करते हुए

कार्यक्रम का उदघाटन चिन्नगंजम मंडल के राजबंगारू पालम गाँव के पंचायत अध्यक्ष श्री डुन्ना यदुकोन्डलु द्वारा किया गया। श्री अर्चिमान लाहिड़ी, उप निदेशक, श्री बी. नरसिंहा राव, सहायक निदेशक, श्री टी. नन्द किशोर, क्षेत्रीय समन्वयक, नाक्सा और श्री जी श्रीनिवासलु, फील्ड पर्यवेक्षक ने तालाब कृषि, चारा, प्रबंधन, जलीय कृषि में विविधता और आंध्र प्रदेश में इसकी क्षमता जैसे विभिन्न विषयों पर चर्चा की। श्री डुन्ना यदुकोन्डलु ने किसानों के लाभ के लिए ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

> प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 13-15, 2017 तक एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा द्वारा किया गया। प्रशिक्षण में 20 कृषको ने भाग लिया

करने के लिए एमपीईडीए की सराहना की और भविष्य में और कार्यक्रम आयोजित करने का अनुरोध किया। प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र और उपबंध वितरित किए गए।

श्री जी श्रीनिवासुलु, फील्ड पर्यवेक्षक ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

अदवुलदेवी में 'जलकृषि में जैव चिरस्थाईता और विकास क्षमताओं पर प्रशिक्षण' पर प्रशिक्षण

एमपीईडीए क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा ने दिनांक 6 से 8 दिसंबर, 2017 तक के दौरान गुंटूर जिले के निज़ांपट्टनम मंडल के अदवुलदेवी गांव में ''जलकृषि में जैव चिरस्थाईता और विकास क्षमताओं पर प्रशिक्षण'' पर

तीन दिवसीय सामान्य प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

श्रीमती सोंटी रेणुखा, पंचायत अध्यक्ष, अदवुलदेवी गांव, निज़ांपट्टिनम मंडल ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री अर्चिमान लाहिड़ी, उप निदेशक, श्री वी रत्ना प्रकाश, परियोजना सहायक (मात्स्यिकी), कृषि विज्ञान केंद्र, कनारु, श्री के श्रीनिवास, नाईक, सहायक निदेशकमात्स्यिकी, निज़ांपट्टिनम, श्री टी नन्द किशोर, क्षेत्रीय समन्वयक, नाक्सा, श्री जी श्रीनिवासलु और श्री एस. वेणुगोपाल राव, फील्ड पर्यवेक्षक द्वारा तालाब तैयारी, जल और मिट्टी की गुणवत्ता प्रबंधन, गुणवत्ता बीज का चयन, चारा प्रबंधन, श्रिम्प कृषि में प्रोबायोटिक्स का उपयोग, जैव-सुरक्षा उपायों, जलकृषि में विविधता और आंध्र प्रदेश में इसकी क्षमता, श्रिम्प कृषि में प्रतिजैविकी का अप्राधिकृत उपयोग, फसल तथा जैसे फसल पूर्व गुणवत्ता प्रबंधन, फसल पूर्व परीक्षण का महत्व और स्वास्थ्य जैसे विभिन्न विषयों पर कक्षाएँ चलाईं।

श्री अर्चिमान लाहिड़ी, उप निदेशक अदवुलदेवी में आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान कक्षा का संचालन करते हुए

श्री जी श्रीनिवासुलु, फील्ड पर्यवेक्षक ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

अ.जा. / अ.ज.जा. लाभार्थियों के लिए बेहतर प्रबंधन प्रथाओं पर प्रशिक्षण

एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग विजयवाड़ा ने गुंटूर जिले के निज़ांपट्टिनम मंडल के गोकर्णमथम गाँव में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति लाभार्थियों के लिए दिनांक 11 से 15 दिसंबर, 2017 तक "श्रिम्प कृषि में बेहतर प्रबंधन प्रथाओं और जलकृषि में विविधीकरण" पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में 20 प्रतिभागीयों ने भाग लिया।

श्री अर्चिमान लाहिड़ी, उप निदेशक गोकर्णमथम में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान कक्षा का संचालन करते हुए

कार्यक्रम का उद्घाटन निज़ांपट्टिनम गाँव, निज़ांपट्टिनम मंडल के पंचायत अध्यक्ष श्रीमती मोपी देवी विजया निर्मला ने किया। श्री अर्चिमान लाहिड़ी, उप निदेशक, श्री बी. नरसिंहा राव, सहायक निदेशक, श्री के श्रीनिवास नाईक, सहायक निदेशक मात्स्यिकी, निज़ांपट्टिनम और श्री एस वेणु गोपाल राव, फील्ड पर्यवेक्षक जल और मिट्टी की गुणवत्ता प्रबंधन, गुणवत्ता बीज का चयन, चारा प्रबंधन, श्रिम्प कृषि में प्रतिजैविकी का अनधिकृत उपयोग जैसे विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण दिया।

श्री एस. वेणु गोपाल राव, फील्ड पर्यवेक्षक ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

श्रिम्प फार्म के लिए फील्ड दौरा

कारवार में पर्यावरणानुकूल श्रिम्प कृषि और जलकृषि में विविधता पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

अ.जा./अ.ज.जा. श्रेणी के युवा उद्यमियों को प्रेरित करने हेतु एमपीईडीए के उप-प्रभाग, कारवार ने पर्यावरणानुकूल श्रिम्प कृषि और जलकृषि में विविधता पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

बाड गाँव के अम्बेडकर भवन हॉल में दिनांक 17 से 19 जनवरी, 2018 तक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में चिरस्थाई श्रिम्प कृषि उत्पादन में अपनाए गए बेहतर प्रबंधन प्रथाओं और कीचड़ केकड़ा/सीबास/तिलापिया जैसे निर्यात योग्य प्रजातियों की वैज्ञानिक कृषि पर जागरूकता व्यक्त की।

प्रशिक्षण का आयोजन कारवार के नगर निगम परिषद के अनुरोध पर किया गया। कार्यक्रम में उत्तर कन्नड़ जिले के बाड़, नंदंगड्डा, कारवार जिले के 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

श्री विजयकुमार यलिगर, उप निदेशक प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान विभिन्न मदों पर चर्चा करते हुए

कार्यक्रम का उदघाटन श्री देवनंद कनेकर, अ.जा./अ.ज.जा. समुदाय के अध्यक्ष, कारवार ने किया। उन्होंने नोट किया कि जलकृषि नए नौकरी के अवसर प्रदान कर सकती है और किसानों के आर्थिक स्तर को बढ़ा सकती है।

श्री एस.एम. शिरोदकर, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, श्री विजयकुमार यलिगर, उप निदेशक, श्री वेंकटरामन हेडगे, उप निदेशक और श्री श्रीपाद कुलकर्णी, एएफ़डीओ, राज्य मात्स्यिकी विभाग ने भूमि का चयन, तालाब रचना, निर्माण, जैविक पहलुओं, पैदावार के लिए बीज भंडारण, जैव सुरक्षा और श्रिम्प कृषि में बेहत्तर प्रबंधन प्रथाओं, कीचड़ केकड़ा कृषि का विविधीकरण, सीबास कृषि, तिलापिया कृषि, वित्तीय सहायता और आर्थिक व्यवहार्यता जैसे विविध विषयों पर कक्षाएँ चलाई।

दूसरे दिन, प्रशिक्षणार्थियों ने कानसगिरी, कदवाड़, मडीबाग गाँवों के श्रिम्प फार्मों का दौरा किया और व्यावहारिक तरीकों का निरीक्षण किया और फार्म संचालकों/ तकनीशियनों से बातचीत की।

समापन समारोह में श्रीमती लीलाबाई थानेकर, उपाध्यक्ष, नगर निगम परिषद कारवार ने अ.जा./अ.ज.जा. के व्यक्तियों के लिए अपने इलाके में ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने हेतु एमपीईडीए के प्रयास की सराहना की। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को अपनी सामाजिक-आर्थिक

प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र एवं स्टैपेंड का वितरण करते हुए

स्थिति को बढ़ाने के लिए जलकृषि को अपनाकर एक सोसाइटी और क्लब गठित करने हेतु आगे आने की सलाह दी और इस के लिए सरकार भूमि पट्टे पर देने का आश्वासन भी दिया। श्री विजयकुमार यारगल, उप निदेशक ने एमपीईडीए से आवश्यक समर्थन का आश्वासन दिया।

श्री वित्तल लांजेकर और श्रीमती रूपा हलसावर ने किसानों की तरफ से एमपीईडीए का शुक्रिया अदा किया और कहा कि प्रशिक्षण से उन्हें जलकृषि के नई तकनीकों और विकासों के बारे में सीखने में मदद मिली। प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र और स्टैपेंड वितरित किए गए। श्री एस.एम. शिरोदकर, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

उष्णकटिबंधीय लॉबस्टर जलकृषि: भारत के लिए एक नया कार्यक्षम उद्योग

*डॉ. सगीव कोल्कोवस्की

बाज़ार में उष्णकटिबंधीय लॉबस्टर की उच्च मांग है जो चीन और दक्षिण पूर्व एशिया से प्रति किलोग्राम 100 अमेरिकी डॉलर तक ला सकता है। हालांकि, आजकल बीज आपूर्ति की कमी के कारण भारत में लॉबस्टर मात्स्यिकी सीमित और अविकसित रूप में हैं। वियतनाम में उष्णकटिबंधीय लॉबस्टर *पुर्यूलस* की कृषि प्रति वर्ष 1,500 टन उत्पादन के साथ एक उभरता हुआ व्यवसाय बन गया है। दक्षिण भारत में, कई परीक्षण ने इस नए उद्योग की क्षमता को साबित किया है।

उष्णकटिबंधीय लॉबस्टर या टीएल को चीन और दक्षिण पूर्व एशिया में उच्च मूल्य का माना जाता है, जिसका मूल्य प्रति किलो 100 अमेरिकी डॉलर तक पहुंच जाता है। इन प्रीमियम क्रस्टेसियन की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए लॉबस्टर की कृषि को बढ़ाया गया है। खराब प्रबंधन या जलवायु परिवर्तन, आवास आदि सहित अन्य कारकों के कारण दुनिया भर में लॉबस्टर मात्स्यिकी उत्पादन गतिहीन या घटती स्थिति में हैं। लंबे लार्वा चरण और लार्वे की नाजुक प्रकृति जैसी जैविक बाधाओं के कारण लॉबस्टर का एक जीवन चक्र पूरा करना और निरंतर तथा चिरस्थाई रूप से किशोरों का बड़े पैमाने पर उत्पादन अभी तक निष्पाद्य नहीं हुआ है। वर्तमान में, भारत या दुनिया में कहीं और किशोर उष्णकटिबंधीय लॉबस्टर की कोई वाणिज्यिक आपूर्ति नहीं है। अतः, 'लॉबस्टर कृषि' में गहरी रुचि है, यानि स्वाभाविक रूप से लॉबस्टर बच्चे या लॉबस्टर

*Nutrakol Pty Ltd, Australia, World Aquaculture Society, email: info@nutrakol.com

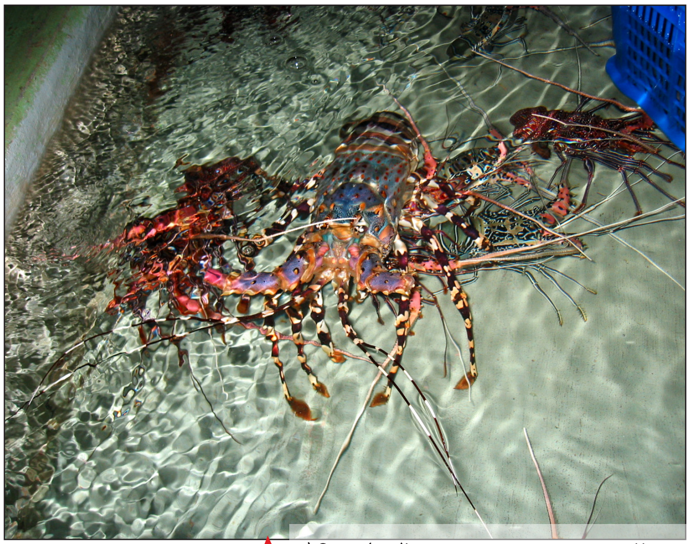

होल्डिंग टैंक में वयस्क (बाजार का आकार) लॉबस्टर

बीज या इसके बच्चे का पकड़, और उन्हें बाजार में बिक्री योग्य पालन करना आदि। आजकल, लॉबस्टर जलकृषि के इस एकमात्र रूप को कई देशों में व्यावसायिक सफलता मिली है। (जोन्स, सी. एट अल., 2015)।

पिछले दशक में, उष्णकटिबंधीय लॉबस्टर बच्चों की कृषि एशिया के कई देशों में जैसे वियतनाम, इंडोनेशिया, फिलीपींस और मलेशिया में विकसित की गई थी। चीन, थाईलैंड और भारत में लॉबस्टर कृषि विकास में रुचि बढ़ रही है।

अब तक, प्रति वर्ष 1,500 टन उत्पादन के साथ वियतनाम सबसे विकसित उद्योग के रूप में उभरा है इसके बाद में प्रति वर्ष 24-40 टन उत्पादन के साथ इंडोनेशिया है। 2015 से, इंडोनेशिया में 200 ग्राम से कम लॉबस्टर इकट्ठा करना अवैध है, जोकि उद्योग के विकास को सीमित करता है।

मुख्य रूप से, दो मुख्य उष्णकटिबंधीय प्रजातियाँ हैं -पैनुलिरस ऑर्नाटस और पी. होमारसजो दक्षिण पूर्व एशिया से एकत्र की जाती हैं। इन प्रजातियों के बीच का अनुपात क्षेत्रों के अनुसार बदलता है। वियतनाम में, 75 प्रतिशत पी. ऑर्नाटस हैं और 25 प्रतिशत पी. होमारस हैं जबकि इंडोनेशिया में अधिकांश संग्रह पी. होमारस का है। (जोन्स, सी, 2015) जीवित उष्णकटिबंधीय लॉबस्टर का मूल्य 100 यु.एस.डॉलर तक पहुँच सकता है और इसको मुख्य रूप से चीन को निर्यातित किया जाता है।

संग्रहण

लॉब्स्टर बच्चे का संग्रहण रात के दौरान समुद्री जाल और प्रकाश, छोटे जाल, संग्राहक तथा शेल्टर ट्राप जैसी विभिन्न सामग्रियों आदि विभिन्न तरीकों से किया जाता है। पकड़ की सीमा वियतनाम और इंडोनेशिया* (*संख्या 2015 तक सही है) में प्रति वर्ष क्रमशः 2-4 मिलियन और 0.6-5 मिलियन के बीच है। अधिकांश लॉब्स्टर बच्चे बे जैसे संरक्षित क्षेत्रों से पकड़े जाते हैं। खराब प्रबंधन, होल्डिंग और परिवहन की वजह से संग्रह चरण के दौरान इसकी मृत्यु दर ज़्यादा होती है।

नर्सरी

नर्सरी चरण फ़्लोटिंग फ्रेम से उथले जल में डुबाए हुए पिंजड़े में किया जाता है। बच्चे की वृद्धि 30-50 ग्राम के औसत वजन तक हो जाती हैं और इन्हें कटा हुआ बेकाम का मत्स्य खिलाया जाता है। उत्तरजीविता 30-70 प्रतिशत के बीच होती है। एक बार वांछित वजन तक पहुंचने के बाद, किशोर लॉबस्टर को आमतौर पर गहरे पानी में होने वाले ग्रो-आउट पिंजड़ों में स्थानांतरित किया जाता है। लोबस्टर को बेकाम का मत्स्य खिलाया जाता है और उत्तरजीविता में 5 से 70 प्रतिशत के बीच एक महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है। वृद्धि की अवधि 50 ग्राम से 1 किग्रा तक लगभग 20 महीने का है, पी.ऑरनाटस 1 किलो तक बढ़ गया है जबकि पी. होमारस 500 ग्राम तक बढ़ गया है। (जोन्स, सी. एट अल., 2015) एक बार बाजार के अनुरूप आकार का होने पर, जीवित लॉबस्टर को चीन भेज दिया जाता है।

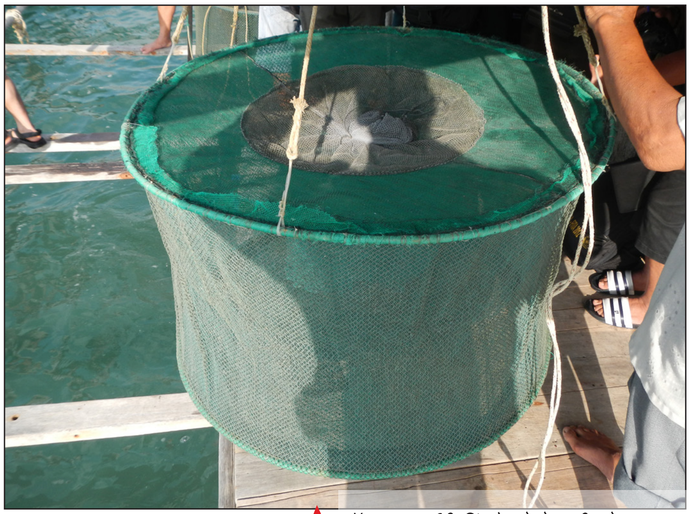

लॉबस्टर नर्सरी पिंजरे फोटो - सी जोन्स

उद्योग क्षेत्र

वियतनाम में, लॉबस्टर की 'कृषि' या 'परिपुष्ट करने' के उद्योग को कई क्षेत्रों में बाँटा गया है:

1. पुरुलुस 'बीज' मात्स्यिकी: मछुआरे द्वारा पुरुलुस का संग्रहण गांवों के पास के उन क्षेत्रों से किया जाता है जहां पुरुलुस केंद्रित हैं।

2. बीज डीलरों/ मध्यस्थ, मछुआरे से 'बीज' खरीदते हैं और नर्सरी साइटों तक ले जाने के प्रभारी होते हैं। कुछ मामलों में, विक्रेताओं के पास बीजों के लिए सुविधाएं भी होती हैं। बढ़ती मांग की आपूर्ति के लिए इंडोनेशिया से बीज के आयात में ज्यादातर अवैध होती है, गंभीर वृद्धि हुई है।

3. नर्सरी कृषि: तट के पास छोटे पिंजड़े। संचालक मध्यास्थ से बीज खरीदते हैं।

4. ग्रो-आउट कृषि: किशोरों को ग्रो-आउट पिंजड़े में स्थानातरित करने से पहले कृषक किशोरों को नर्सरी से खरीदते हैं या उनकी अपनी खुद

की नर्सरी पिंजड़ा होती है।।

5. इससे संबन्धित चारा आपूर्ति (मुख्य रूप से अन्य मछुआरे जो

लॉबस्टर बड़े पैमाने पर पिंजरे

बेकाम की मछली की आपूर्ति करते हैं), उपकरण, थोक खरीदार और निर्यातक।

मुद्दे और समस्याएँ

- बीमारी ('मिल्की डिसीस, सड़ा हुआ पूंछ तथा अन्य) बेकाम की मछली देने जैसे पालन प्रथाओं के कारण, अपेक्षाकृत उथले पानी, पिंजड़ों के अंदर जैविक पदार्थों का संचयन, स्वास्थ्य प्रबंधन और अन्य कारकों और मृत्यु दर में काफी भिन्नता होती है। वियतनाम में उत्तरजीविता में 70 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी जबकि इंडोनेशिया (2013) में यह 30 प्रतिशत कम थी। वियतनाम में कैप्चर्ड हर बच्चों के लिए, 65 यु.एस. डॉलर मिला है। जबकि इंडोनेशिया में यह < 3 डॉलर (जोन्स, सी. 2015) है।

- पकड़े गए जंगली पुरूलुस की मृत्यु दर (30 से 50 प्रतिशत): पैकेजिंग के लिए मूलभूत तरीके, संग्रहण के बाद पुरूलुस की होल्डिंग और परिवहन आदि उच्च मृत्यु दर का कारण है।

- बेकाम की मछली को खिलाने से उत्पन्न समस्याएँ: नर्सरी और ग्रो-आउट स्तर पर के मुख्य मुद्दों में से एक है बेकाम की मछली के साथ लोबस्टर का पोषण और चारा देना है जिसके परिणामस्वरूप बैक्टीरिया लोड और बीमारियों के प्रकोप के कारण उच्च मृत्यु दर होती है।

भारत

वर्तमान में भारत में उष्णकटिबंधीय लॉबस्टर की मात्स्यिकी सीमित और अविकसित है (प्रति वर्ष ~ 64 टन)। जहाँ कोई लॉबस्टर-लक्षित मात्स्यिकी नहीं हैं और अधिकांश लॉबस्टर अन्य मात्स्यिकी की उप पकड़ हैं। पैनुलिरस ऑर्नाटस और पी. होमारस दो मुख्य प्रजातियाँ हैं। कई अन्य प्रजातियों की भी रिपोर्ट की गई है। हाल ही में, किशोर लोबस्टर की कृषि के लिए कुछ छोटे-छोटे परीक्षणों को आशाजनक परिणामों

पेरुलुस उष्णकटिबंधीय लॉबस्टर (लॉबस्टर का आकार जिसे वियतनाम और इन्डोनेशिया से एकत्रित) – फोटो : सी. जोन्स

के साथ किया गया। तमिलनाडु के तूतुक्कुडी जिले में, 40-60 ग्राम (पी. होमारस) के किशोरों के प्रकृतिकृत पकड़ को स्टील या प्लास्टिक फ्रेम के दो अलग-अलग पिंजड़ों में बढ़ाया गया और इनको बेकाम की मछली खिलाया गया। प्रति पैदावार को पाँच महीने की वृद्धि अवधि के बाद 30,000-54,000 रुपये के कुल औसत लाभ के साथ 95 प्रतिशत की उत्तरजीविता रिपोर्ट की गई (कालिदास, सी. एट अल., 2017)। गुजरात में एक अलग परीक्षण किया गया था जहाँ लॉबस्टर, 100 ग्राम के औसत वजन के पैनुलिरस पॉलीफैगस को नेट द्वारा पकड़ा गया और 'मिट्टी के गड्ढे' में रखा गया। तीन महीने की वृद्धि अवधि में औसत वजन में 250-300 ग्राम तक हुई। लॉबस्टर ने प्रति किलो लगभग 1000

किशोर लॉबस्टर

रुपये का बाजार मूल्य प्राप्त किया (बाराय्या, के जी एट. अल. 2017)।ये परिणाम इस नए उद्योग की अप्रत्याशित क्षमता का प्रदर्शन करते हैं।

भविष्य के दिशा-निर्देश

सुझाव दिया जाता है कि दक्षिण भारत से उष्णकटिबंधीय लोबस्टर पुरूलुस और किशोरों के संग्रह को भी शामिल करके विभिन्न राज्यों और स्थानों में कई जलकृषि परियोजनाओं को विकसित किया जाए और

लॉब्स्टर मत्स्यन यान (रात के संग्रहण के लिए प्रकाश और जाल की व्यवस्था) - फोटो : सी. जोन्स

तटवर्ती टैंक और/या निकट तट पिंजड़ा प्रणाली का उपयोग करते हुए उसे बाज़ार के अनुरूप आकार में कृषि करें। उच्च अन्तरजीविता एवं चिरस्थाईता को सुनिश्चित करने के लिए इन परियोजनाओं को अग्रवर्ती संग्रह (या तो पुरुलुस या किशोर लॉबस्टर) हैंडलिंग, परिवहन तथा ग्रो-आउट तरीकों पर ध्यान देना चाहिए। बीमारियों के प्रकोप को कम करने के लिए बेकाम की मछली के उपयोग को प्रतिस्थापित या सीमित करके श्रेष्ठ पोषण और उपलब्ध चारे के सर्वोत्तम भोजन प्रथाओं (फार्म में तैयार किया गया चारा और /या बूस्टर, इत्यादि) को अपनाना चाहिए।

आभार

यह लेख विश्व जलकृषि सोसाइटी (डब्ल्यूएएस) के निदेशक के रूप में कार्यरत लेखक द्वारा 25 नवंबर, 2017 को कोच्ची, भारत में 'उभरती जलकृषि प्रौद्योगिकी कार्यशाला' पर आयोजित एक कार्यशाला में दी गई एक प्रस्तुति पर आधारित है और डब्ल्यूएएस और एमपीईडीए द्वारा समर्थित है। लेखक डॉ. क्लाइव जोन्स को उनके इस लेख पर आधारित मूल्यवान डेटा और फोटो के लिए धन्यवाद देना चाहते हैं।

संदर्भ

बाराय्या, के जी, श्रीनाथ, के आर, सुखधाने, के एस, कुमावत, टी., दिवू, डी., प्रधान, आर के, वास, वी के और अज़ीज़, पी. ए 2017। भावनगर-अमरेली तट, गुजरात के अंतराल क्षेत्र में पिट कृषि का उपयोग करते हुए लॉबस्टर परिपोषण। 11वीं भारतीय मात्स्यिकी और जककृषि फोरम, कोच्ची, भारत, 21-24 नवंबर, 2017।

जोन्स, सी. 2015. दक्षिणपूर्व एशिया में रॉक लॉबस्टर कृषि की स्थिति और ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में इसका अवसर। 2015 ट्रांस-तस्मान रॉक लॉबस्टर उद्योग सम्मेलन और 9 वीं रॉक लॉबस्टर कांग्रेस, 29-30 अप्रैल, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया।

जोन्स, सी, हुआंग, एलएल., तुआन, एलए., बहराव्वी, एस और इरविन, एस. 2015.पूर्वी इंडोनेशिया, वियतनाम और ऑस्ट्रेलिया में स्पाइनी लॉबस्टर जलकृषि विकास। अंतिम रिपोर्ट, एसीआईएआर, ऑस्ट्रेलिया, 52 पीपी।

कालिदास, सी., रंजीत, एल., कविता, एम., जगदीस, आई. और मनोजकुमार, पी पी 2017. तूत्तुकुड़ी जिले की सिप्पीकुलम मत्स्यन गाँव के समुद्री पिंजड़े का मॉडल फार्म की सफलता की कहानियाँ। 21-24 नवंबर, 2017 तक कोच्ची, भारत में आयोजित 11 वीं भारतीय मात्स्यिकी और जलकृषि फोरम।

जैव जलकृषि के लिए एमपीईडीए और स्विट्ज़रलैंड के सीओपीपी के साथ साझेदारी

यूरोपीय संघ में जैविक समुद्री खाद्य उत्पादों की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए, सीओपीपी सहकारी - स्विट्ज़रलैंड की सबसे बड़ी खुदरा और थोक कंपनियों में से एक - ने भारत में निर्यातोन्मुख जैवजल कृषि को विकसित करने हेतु समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) के साथ साझेदारी की है।

एमपीईडीए उद्यमियों की पहचान करने और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रमाणीकरण प्रोटोकॉल को पूरा करने वाले उच्च गुणवत्ता वाले जैविक श्रिम्प के उत्पादन पर तकनीकी सलाह प्रदान करने में सहायता करेंगे।

सीओओपी, जिसको आज पूरे स्विट्जरलैंड में लगभग 2,200 बिक्री आउटलेट और यूरोप भर में थोक / उत्पादन व्यवसाय है, ने 15 प्रतिशत तक के प्रीमियम पर प्रसंस्कृत जैविक श्रिम्प और प्रशिक्षण सहित विकास गतिविधियों के लिए वित्त पोषण के द्वारा अतिरिक्त 5 प्रतिशत की खरीद का प्रस्ताव किया है।

केरल में जैविक ब्लैक टाइगर श्रिम्प (पीनस मोनोडोन) की पायलट परियोजना प्रारंभ में 1,000 हेक्टेयर में किया जाएगा, यदि इस में सफलता मिली तो, राज्य भर के अन्य स्थानों में भी बढ़ाया जाएगा।

एमपीएडीए के अध्यक्ष डॉ. ए. जयतिलक, भा.प्र.से. के मुताबिक, जैविक उपज के बारे में यूरोप में जागरूकता बढ़ रही है और इससे एक विशिष्ट बाजार का गठन होता है। कृषकों को जैविक उत्पादन में आने में संकोच का कारण इसकी बढ़ती हुई लागत है। प्रस्तावित प्रीमियम मूल्य अतिरिक्त लागत को बदल देंगे और जैविक कृषि करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करेंगे।

एमपीईडीए और सीओओपी जैविक श्रिम्प बीज के उत्पादन के लिए एक श्रिम्प हैचरी के प्रमाणन की सुविधा प्रदान करेंगे और इसी तरह परियोजना के लिए एक जैविक चारा स्रोत बनाने हेतु छोटे पैमाने पर फ़ीड मिल इकाई को प्रमाणित और सूचीबद्ध करेंगे।

सीएओपी के प्रबंधन के सदस्य जेरार्ड ज़ुरलटर ने कहा कि वियतनाम के बाद भारत जैविक कृषि में उनका दूसरा चरण होंगे, जहाँ उन्हें समान परियोजनाओं और जैविक उत्पादकों के साथ सफलता मिली है जो पारंपरिक कृषकों की तुलना में उच्चतर राजस्व हासिल कर रहे हैं।

-www.thehindubusinessline.com

मात्स्यिकी में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर प्रकाश डालना

केंद्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीएमएफआरआई) ने अपने 71 वें संस्थापन दिवस पर आयोजित एक प्रदर्शनी-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान मत्स्यपालन में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर प्रकाश डाला। जनता के बीच जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से, सीएमएफआरआई ने जलवायु लचीला जलकृषि पर राष्ट्रीय नवाचार (एनआईसीआरए) योजना के तहत किए गए जलवायु परिवर्तन पर अध्ययन के शोध परिणाम को प्रदर्शित किया।

समुद्री शोध में नवीनतम विकास को समझने और समुद्री जैव विविधता के चमत्कारों का आनंद लेने वाले संदर्शकों को अध्ययन के ब्योरे की व्याख्या करते हुए वैज्ञानिकों ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्री धरातल का तापमान (एसएसटी), क्लोरोफिला, हवा और वर्षा, समुद्र प्रवाह, स्पॉनिगं अवधि, परिपक्वता, वितरण और विभिन्न समुद्री मत्स्यों की पकड़ जैसे कई क्षेत्रों में बदलाव आए हैं।

उन्होंने कहा कि व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण मत्स्य संसाधनों के वितरण में बदलाव पकड़ को प्रभावित हो जाने से आजीविका और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को एक चिरस्थाई स्तर पर यह प्रभावित करता है। एनआईसीआरए के परियोजना समन्वयक पी यू ज़करिया ने कहा, "अत्यधिक मत्स्यन के दबाव के साथ जलवायु परिवर्तन भी मत्स्य संसाधनों में प्रतिकूल प्रभाव डालता है।" आगे उन्होंने कहा कि मत्स्यन को कम करना, मैंग्रोव का जंगल बनाना, समुद्री शैवाल कृषि और पिंजड़ा मत्स्य कृषि जैसे अनुकूल उपाय समय की जरूरत है।

एनआईसीआरए अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार, अत्यधिक शोषण और जलवायु तनाव को रोकने के लिए निवास मैपिंग और पारिस्थितिकीय प्रतिरूपण किया जा सकता है। ऑपन हाउस के दौरान, छात्रों और जनता को समुद्री जीवन के रहस्यों के एक रिंगसाइड दृश्य का आनंद लेने का दुर्लभ अवसर भी मिला। कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, राष्ट्रीय समुद्री जैव विविधता संग्रहालय, विभिन्न अत्याधुनिक प्रयोगशालाएं, समुद्री शोध मछली घर, कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केंद्र (एटीआईसी) और हैचरियाँ आदि जनता के लिए खोली गईं। जल पारिस्थितिकी तंत्र में प्लास्टिक कचड़े को ढेरने से उत्पन्न खतरों पर जागरूकता पर भी प्रकाश डाला।संदर्शकों के लिए मुख्य आकर्षण संग्रहालय था।

- www.newindianexpress.com

भारत में सस्ती मत्स्य रोग निदान किट की पेशकश

भारत के मीठा पानी मत्स्य जलकृषि क्षेत्र में बीमारी के कारण उत्पादन लगभग 25% हिस्सा तक कम हुआ है। समस्या का समाधान हेतु सहायता के रूप में, केंद्रीय मीठा पानी जलकृषि संस्थान (सिफ़ा) ने दो कम दाम वाले नैदानिक किट बनाए हैं जिससे मीठे पानी मत्स्य के प्रमुख जीवाणु रोगों का पता लगा सकते हैं।

सीआईएफए के वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रियब्राता स्वैन ने कहा कि समुद्री खाद्य स्रोत स्पॉट संश्लेषण और स्पॉट एलीसा किट जीवाणु रोगों का निदान करने के लिए और नियमित आधार पर कृषित मत्स्य के स्वास्थ स्थिति का अवलोकन करने के लिए मत्स्य किसानों द्वारा क्षेत्र की स्थिति में उपयोग करने के लिए है।

स्वैन ने कहा कि "इस मामले में, किसी भी बीमारी का पता लगाने के लिए एक जीवित मत्स्य या छोटे पंख के टुकड़े के खून को एकत्र किया जाता है, जबकि एक गैर-जीवित मत्स्य प्रयोगशाला में भेजी जाती है।" "किट का उपयोग करने से किसानों को बीमारी का पता लगाने में मदद मिलेगी और समय पर इसे नियंत्रित भी कर सकते हैं। "एक बार पता लागने से, रोग निदान कर सकते हैं और उत्पादन को नुकसान से बचाया जा सकता है।"

हाल ही में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर-सीआईएफए) पर संसदीय स्थाई समिति द्वारा नैदानिक किट उद्घाटित किया गया। स्पॉट संश्लेष किट की लागत लगभग 12 रु. (0.18 यूएसडी, 0.15ईयूआर) और डॉट एलिसा किट की लागत 42 रु. (0.65 यूएसडी, 0.54ईयूआर) है। यह छत्तीसगढ़ स्थित फर्म अग्रवाल ट्रेडिंग कंपनी में उपलब्ध हैं, जिनको सीआईएफए के मार्गदर्शन में सार्वजनिक रूप में किट बेचने हेतु लाइसेंस प्राप्त है।

स्वैन ने कहा कि उच्च घनत्व स्थितियों में वृद्धि किए गए मत्स्य, जैसे कि कई भारतीय जलकृषि संचालन में पाए जाते हैं, यह विशेष रूप से जीवाणु संक्रमण के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं। रोग के प्रकोप मृत्यु दर को बढ़ाते हैं और उत्पादन दक्षता को कम करते हैं, जिससे मत्स्य कृषकों को उच्च आर्थिक नुकसान पहुंचता है।

"स्वैन ने कहा,: कंपनी इसे सिर्फ भारत में ही बेच सकते हैं और इसे अन्य देशों में निर्यात करने की अनुमति नहीं दी गई है।" स्वान ने कहा, "विविधतापूर्ण प्रजातियों के मत्स्य कृषि के लंबवत विस्तार और उच्च घनत्व में भंडारण के परिणामस्वरूप जीवाणु, परजीवी और वायरल रोगजनकों का लगातार प्रकोप होता है, किसानों से तकनीकी हस्तक्षेप और उपयुक्त नैदानिक और नियंत्रण उपायों को कार्यान्वित करने को कहा जाता है।"

सिफ़ा के अनुसार, भारतीय जलकृषि द्वारा सामना किए जाने वाले प्रमुख जीवाणु रोगों में अल्सर, लाल रोग, सेप्टिसिमीया, एयरोमोनीसिस और गिल रोग आदि शामिल हैं।लाल बीमारी आम तौर पर कार्प कृषि में और यह लगातार पूरे वर्ष में हो सकता है, विशेषतः कार्प कृषि के कल्चर अवधि के दौरान। अन्य जीवाणु रोग, जैसे एडवर्ड्सेलोसिस और बैक्टीरियल गिल, मुख्य रूप से सर्दी के दौरान होते हैं, जबकि कॉलमरिस और विब्रोसिस गर्मी और बरसात के मौसम के दौरान गंभीर रूप से प्रभावित होता है।

- www.seafoodsource.com

सरकार द्वारा उडिपी के पिंजड़ा कृषि नमूने को दोहराने पर विचार

मात्स्यिकी राज्य निदेशालय, उडिपी के घर-घर पिंजड़ा मत्स्य कृषि के सफल नमूने को अपनाने की कोशिश में है।

प्रारंभ में, लगभग 4मीटर/4 मीटर आकार के पिंजड़े स्थापित किए जाएंगे ताकि इसे स्थानीय लोग अपने यार्ड में स्थापित कर सकें और मत्स्य कृषि शुरू कर सकें। जबकि पोलेम पर खुले समुद्र में चयनित मत्स्य को घेरे में और चापोली डैम के जलाशय में बढ़ाने का अभ्यास पिछले कुछ सालों से चल रहा है, नए मॉडल कृषि में कृषकों के अलावा अन्य लोगों को भी शामिल करेंगे ताकि वे अपने स्वयं के उपभोग के लिए तथा यहाँ तक कि अतिरिक्त उत्पादन होने पर बिक्री के लिए भी मत्स्य कृषि कर सकते हैं।

मात्स्यिकी सचिव गोविंद जैसवाल ने कहा कि "इससे लोगों को बाजार पर कम निर्भरता होगी और वे स्थानीय प्रजातियाँ ले सकेंगे। तकनीकी और वित्तीय सहायता, विभाग द्वारा प्रदान की जाएगी," उन्होंने आगे कहा कि राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एनएफडीबी) इस संबंध में सहायता प्रदान करने पर सहमत हो गया है।

उन्होंने कहा कि "इस कार्य के लिए मीठे जल के मत्स्य की स्थानीय प्रजातियाँ अधिक व्यावहारिक होंगी। समान का बीज और चारा एनएफडीबी और केंद्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान संस्थान से प्राप्त किया जाएगा। गोवा में हर ब्लॉक को अवसर प्रदान किया जाएगा।"

-www.timesofindia.indiatimes.com

क्लाम प्रसंस्करण सुविधा की स्थापना

क्लाम संग्रहण और प्रसंस्करण, केरल के छोटे पैमाने के मछुआरों का एक महत्वपूर्ण आजीविका उद्यम है, जिस पर आईसीएआर-सीआईएफटी, कोचीन ने पेरुंबलम पंचायत और हरिता किसान क्लब, पेरुंबलम के सहयोग से पीपीपी मोड के माध्यम से समय पर हस्तक्षेप किया है।

यह सुविधा विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित परियोजना के तहत स्थापित की गई है और पेरुंबलम में इस तरह की यह पहली परियोजना है। इस सुविधा का लाभ गाँव के लगभग 200 मछुआरे परिवारों को मिलेंगे, जो अपनी आजीविका के लिए क्लाम संग्रहण और पैकिंग पर निर्भर रहते हैं।

डॉ. सी.एन. रविशंकर सुविधा का उदघाटन करते हैं

यह परियोजना 2010 में संस्थान द्वारा किए गए नैदानिक अध्ययन पर आधारित थी, जहाँ क्लाम मछुआरों के समूह को बनाने और प्रसंस्करण गतिविधि को वैज्ञानिक रूप से व्यवस्थित करने की संभावना है, जो अब गृहस्थ स्तर पर आधारित है इसकी पहचान की गई है। परियोजना मई 2015 में शुरू की गई।

पहले चरण के दौरान मछुआरिन और मछुआरों के समूहों का गठन किया गया और इन समूहों को क्लाम प्रसंस्करण के बेहतर तरीकों पर प्रशिक्षित किया गया। अगले चरण में, क्लाम प्रसंस्करण सुविधा का निर्माण चालू किया गया। इस सुविधा में पैदावार क्लाम को स्वच्छ रूप से संसाधित करने की एक प्रक्रिया क्रम होगी।

क्लाम प्रसंस्करण सुविधा का उद्घाटन दिनांक 8 जनवरी, 2018 को आयोजित एक बैठक में डॉ. एन रविशंकर, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफ़टी, कोचीन द्वारा किया गया, श्री के.एस. शिबु, अध्यक्ष, पेरुंबलम पंचायत इसके अध्यक्ष रहे।

डॉ निकिता गोपाल, परियोजना के प्रमुख अन्वेषक ने परियोजना के कार्यान्वयन के बारे में विवरण प्रस्तुत किया। वार्ड सदस्य श्री पी.डी. सजीव, श्रीमती शोभना चक्रपाणी, श्री के.ए. जयकुमार और पेरुंबलम कोयर सोसाइटी के अध्यक्ष श्री पी.टी. अजय ने आशंसा भाषण दिया। श्री एस श्रीजित, परियोजना के वैज्ञानिक तथा सह-पीएल ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया और श्री अनूप राज, सुविधाकार, हरिता किसान क्लब ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

-सीआईएफ़टी

आईसीएआर-सीआईएफटी ने विक्रेताओं के लिए आधुनिक, स्वच्छ, प्रशीतन सक्षम मोबाइल मत्स्य वेंडिंग कियोस्क शुरू किया

श्रीमती चन्द्रिका देवी, नगर पालिका अध्यक्ष, डॉ. रविशंकर, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफ़टी कियोस्क का उदघाटन करते हुए

आईसीएआर-केंद्रीय मत्स्य प्रौद्योगिकी संस्थान, कोचीन ने मछुआरों, छोटे पैमाने के विक्रेताओं और खुदरा विक्रेताओं की हैंडलिंग और मार्केटिंग प्रथाओं को बेहतर बनाने हेतु एक प्रशीतन सक्षम मोबाइल मत्स्य वेंडिंग कियोस्क विकसित किया है। कियोस्क के मुख्य घटक हैं - एक शीत भंडारण सहप्रदर्शन सुविधा, हाथ से संचालित डी-स्केलिंग मशीन, मत्स्य ड्रेसिंग डेक के साथ वॉशबेसिन, पानी की टंकी, अपशिष्ट संग्रह कक्ष और कार्य स्थल आदि।

इस इकाई में, उपभोक्ता सीधे पारदर्शी ग्लास कवर के माध्यम से मत्स्यों को देख सकते हैं और अपने पसंद के अनुसार खरीदी कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, कियोस्क में डी-स्केलिंग, कटाई, सफाई और पैकिंग संचालन का प्रावधान हैं। सही परिचालन परिस्थिति में, इकाई में मत्स्य के शेल्फ जीवन को 4 से 5 दिनों तक बढ़ा सकती है और इससे मत्स्य विक्रेता अपने नाममात्र के लाभ को बढ़ा सकता है। कियोस्क की संरचना लागत जीएसटी सहित लगभग 80,000/- रुपए होंगे जो आधुनिक कियोस्क पर निवेश हेतु छोटे पैमाने के और खुदरा मत्स्य विक्रेताओं के लिए सस्ती है।

2 जनवरी 2018 को पवनकुलंगारा जंक्शन, पुतियकावु, तृपूनित्तुरा, एरणाकुलम के शाह शीत भंडारण और मत्स्य केंद्र में आईसीएआर-सीआईएफटी द्वारा कियोस्क का उद्घाटन किया गया। डॉ. सी. एन रविशंकर, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफटी, डॉ. मनोज पी. सैमुअल, विभागाध्यक्ष, इंजीनियरिंग और आईसीएआर-सीआईएफटी, कोचीन के अन्य

कियोस्क में पहली बिक्री

कर्मचारियों की उपस्थिति में श्रीमती चंद्रिका देवी, नगर पालिका अध्यक्ष, तृपूनित्तुरा, एरणाकुलम ने कियोस्क का उद्घाटन किया।

उद्घाटन समारोह में, श्रीमती चंद्रिका देवी ने मत्स्य विक्रेताओं केलिए ऐसी उपयोगी तकनीकों को विकसित करने के लिए आईसीएआर-सीआईएफटी वैज्ञानिकों के प्रयासों को प्रशंसित किया जो न केवल मत्स्य के स्वच्छ विपणन में मदद करेंगे बल्कि मत्स्यों के गुणवत्ता में बाधा डाले बिना शेल्फ जीवन को भी बढ़ाएंगे। पहली बिक्री करते हुए डॉ. रविशंकर ने कहा कि यह वेंडिंग कियोस्क उपभोक्ताओं के उपभोग के लिए सुरक्षित और स्वच्छ मत्स्यों की ओर आकर्षित करने के अलावा मत्स्य विक्रेताओं की कठिनाईओं को भी कम कर सकता है।

-सीआईएफटी

आयातक श्रिम्प आपदा से डरते हैं

कांग्रेस और वर्तमान प्रशासन में कुछ लोग जिस लापरवाही से व्यापारिक मुद्दों को सुलझा रहे हैं, उसे देखते हुए श्रिम्प आयातकों को एक आपदा का डर है जो पूरे यू.एस. के रेस्तरां क्षेत्र और खुदरा क्षेत्र में प्रभाव डाल सकत है।

सीनेट बजट विधेयक, एसबी 1662 में एक अनुवृद्धि है, यदि वह पारित किया गया तो समुद्री खाद्य आयात मॉनिटरिंग कार्यक्रम की नई रिपोर्टिंग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए यू.एस. श्रिम्प उद्योग को 30 दिन देंगे। फिलहाल, निकट भविष्य के लिए श्रिम्प को छूट दी गई है।

श्रिम्प, देश का सबसे लोकप्रिय समुद्री खाद्य है, जिसे अमेरिकी प्रति व्यक्ति, प्रति वर्ष 4 एलबीएस से अधिक की औसत में खाते हैं। इसके लिए कुल श्रिम्प के लगभग, 90% के आसपास का आयात किया जाता है। चालू वर्ष में, नवंबर के अंत तक लगभग 93.4 मिलियन पाउंड के साथ गल्फ अवतरण, पाँच साल में दूसरे निम्नतम स्थान पर रहा। इस बीच, [जिसमें दिसंबर के आयात को अभी शामिल नही किया गया है] आयात 1.3 बिलियन पाउंड के रिकॉर्ड स्तर पर है।

अतः गल्फ, अमेरिकी श्रिम्प आपूर्ति के लगभग 7% का उत्पादन कर रहे हैं। इस माहौल में, मिसिसिपी सेन थड कोचरन ने सीनेट बजट बिल में एक अनुवृद्धि पेश किया है जिसके लिए एनएमएफएस को 30 दिनों के भीतर अमेरिकी समुद्री खाद्य आयात मॉनिटरिंग कार्यक्रम के तहत श्रिम्प को लाना पड़ेगा।

आईयूयू मत्स्यन के खिलाफ यू एस उपभोक्ताओं को सुरक्षित करने हेतु सिम्प को समुद्री खाद्य आयातकों को पोत, मत्स्यन लाइसेंस, पैदावार का अधिकार, पाउंड, पहले रिसीवर का नाम, उत्पाद रूप, पैदावार की विधि, फार्म, और अन्य आंकड़ा सहित दस अलग-अलग डेटा फ़ील्ड को ट्रैक करने की आवश्यकता होती है।

एनओएए के खिलाफ एनएफआई मुकदमा हार गई, उनका तर्क था कि संबोधित की जा रही समस्या के लिए नियम अत्यधिक थे। इसके विपरीत में, यूरोप जो आईयूयू मत्स्यन के खिलाफ लड़ाई में वैश्विक अग्रणी है, न्यूजीलैंड जैसे पर्याप्त निगरानी प्रणाली वाले देशों से आयात के लिए छूट देता है।

यू.एस. इस तरह का कोई विभेदन नहीं करता है और नियम के अधीन

सभी समुद्री खाद्य उत्पादों का पूरा आकड़ा प्रदान करना पड़ता है। हालांकि, इस आवश्यकता के तहत आने वाला प्रमुख यू.एस. उत्पाद ट्यूना (सभी प्रकार), कॉड, केकड़ा (ब्लू स्विमिंग केकड़े को छोड़कर) और स्नैप्पर है।

कार्यक्रम के विकास में, श्रिम्प को विशेष रूप से छूट दिया गया था क्योंकि जांचकर्ताओं ने श्रिम्प पर लागू आवश्यकताओं की जटिलता को पहचाना, परंतु लाभों के प्रति कुछ निश्चित नहीं थे। तदनुसार, एनओएए ने कहा कि श्रिम्प और अबालोन दो उत्पाद हैं जिन्हें आगे के अध्ययन के बिना सिम्प डेटा को पूरा करने की आवश्यकता नहीं होगी।

सेनेट राइडर इस फैसले को खत्म कर देगा, और श्रिम्प को 30 दिनों के अंदर कार्यक्रम में लाया जाएगा।

अगर एनओएए का अनुपालत हुआ, तो यह एक आयात प्रतिबंध के समान होगा। आम तौर पर ऐसे कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के लिए 24 से 36 महीने लगते हैं, क्योंकि संपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला को आंकडा संग्रहण के लिए सॉफ्टवेयर और सिस्टम विकसित करने की आवश्यकता होती है और आवश्यकताओं के बारे में आपूर्तिकर्ताओं को पोत स्तर तक प्रशिक्षित करने की आवश्यकता होती है।

मौजूदा एसआईएमपी के कार्यान्वयन की समय सारिणी भी अप्रभावी साबित हुई है। तीन साल के कार्यक्रम डिजाइन, और कार्यान्वयन के अंतिम नियम से एक पूर्ण वर्ष, एनओएए पायलट परीक्षणों ने इस साल 1 जनवरी तक सिर्फ कुछ सौ लोड को ही अनुमति दी थी इससे एनओएए को इस साल की शुरुआत में ब्लेंकेट छूट जारी करना पड़ा। इस बार, आयातक जो आवश्यक डेटा प्रदान नहीं कर सकते हैं, वे उस फ़ील्ड को खाली छोड़ सकते हैं, और प्रविष्टि सीमा शुल्क द्वारा संसाधित हो जाएगी। लेकिन भविष्य में किसी बिंदु पर, एनओएए एक कंप्यूटर स्विच फ्लिप

करेगा और इस व्यवस्था को हटा देगा एनओएए समुद्री खाद्य व्यापार के व्यवधान के बारे में चिंतित है और यू.एस. में आयात के प्रवाह को बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं।

कांग्रेस और घरेलू श्रिम्प उद्योग में ऐसा नहीं है जो आयात के बारे में राजनीतिक बिंदु बनाने के लिए भारी आर्थिक विनाश को खत्म कर देगा।

हमारे पास एक असली वैश्विक उदाहरण है जब एक देश आयातित श्रिम्प पर प्रतिबंध लगाते हैं। पिछले साल जनवरी में, ऑस्ट्रेलिया को क्वींसलैंड के अपने घरेलू श्रिम्प उद्योग को एक वाईट स्पॉट प्रकोप का सामना करना पड़ा, और एक किसान ने कच्चे श्रिम्प के आयात पर प्रतिबंध लगाने की मांग की क्योंकि उन्हें डर था कि इस तरह के आयात में वायरस हो सकता है। ऑस्ट्रेलिया के एक आपूर्तिकर्ता, पोसीडॉन सी फुड्स, ने कहा कि वर्ष 2017 जनवरी में, उन्होंने 26-30 किलो टाइगर श्रिम्प के लिए प्रति किलो 16 से 18 यू एस डॉलर का भुगतान किया था। एक महीने बाद, वे 66% की वृद्धि के साथ 27 से 30 यू.एस. डॉलर का भुगतान कर रहे थे।

तब से, ऑस्ट्रेलिया में प्रतिबंध हटा लिया गया, लेकिन कीमत ठीक नहीं हुई। सिडनी मत्स्य बाजार के विक्रेताओं का कहना है कि इस दिसंबर में कुक्ड़ टाइगर श्रिम्प की कीमत प्रति किलोग्राम 50 यू.एस.डॉलर थी जो एक साल पहले की तुलना में 20 यू.एस.डॉलर अधिक है। कई लोग कहते हैं कि बाजार लगभग 50% ऊपर है।

आंशिक रूप से यह ऑस्ट्रेलिया में उत्पादित श्रिम्प की कमी और आयातित श्रिम्प की कमी है। यदि कांग्रेस सिंप कार्यक्रम के तहत श्रिम्प के लिए तत्काल आवश्यकता का अधिदेश देता है, और एनओएए को बताता है कि अब छूट नहीं दे सकता है तो अमेरिका को ऑस्ट्रेलिया की इसी तरह की स्थिति का सामना करना पड़ेगा, सिवाय इसके कि ऑस्ट्रेलिया में स्थानीय श्रिम्प उत्पादन अमेरिका के मुकाबले अपने बाजार का एक बड़ा हिस्सा प्रदान करता है। कई खरीदारों के लिए, श्रिम्प अनुपलब्ध हो जाएगा।

समस्या यह है कि: श्रिम्प सबसे बड़ा समुद्री खाद्य मद है जिसे खाद्य सेवा में बेचता है और और कई रेस्तरां अपने मेनू में श्रिम्प पर निर्भर करते हैं। खुदरा विक्रेताओं के लिए, श्रिम्प एकमात्र सबसे मूल्यवान समुद्री खाद्य मद हैं, जो स्वयं सभी जमे हुए फिनफिश मदों के मूल्य के बराबर है। पिछले साल, श्रिम्प की खुदरा बिक्री का मूल्य 300 मिलियन डॉलर से अधिक था। एसबी 1662 का प्रावधान, यदि प्रभावी होता है, तो अमेरिकी समुद्री खाद्य आयातक उद्योग को नई रिपोर्टिंग आवश्यकताओं को तैयार करने के लिए 30 दिन देंगे। आयात अमेरिकी श्रिम्प उद्योग के 90 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं। अधिकतर आयातकों और दलालों का कहना है कि यदि नए नियमों का पालन करने के लिए मजबूर किया जाता है तो यह आयात को बड़ी बाधाएँ पैदा करेंगे और यह उद्योग को अराजकता में ढकेल सकते हैं।

गल्फ श्रिम्प उद्योग इसे इस तरह से नहीं देखता है दक्षिणी श्रिम्प अलियन्स के एक प्रवक्ता ने टिप्पणी की कि अमेरिकी जल से पकड़े गए श्रिम्प को 'ट्रेसिबिलिटी टिकट' के माध्यम से ट्रैक किया जाना है और कहा कि कोई कारण नहीं कि आयातित श्रिम्प भी रिपोर्टिंग आवश्यकताओं के अधीन हो।

बेशक, अगर गल्फ के श्रिम्प कृषकों को कछुआ वर्जन नियम के अनुपालन हेतु 30 दिन का नोटिस दिया गया तो वे भी चिल्लाएंगे। वास्तव में, कछुआ नियमों के कार्यान्वयन के लिए, उन्हें विकसित और लागू करने हेतु उद्योग के साथ काम करने के लिए कई वर्षों का समय लिया।

यह ज़ाहिर है कि निगरानी कार्यक्रम में श्रिम्प को शामिल करने के तरीकों पर विचार करने के लिए एनओएए कुछ भविष्य के बिंदु के लिए पहले से ही तैयार है। अध्ययन या नियमों को लागू करने की संभावना के बिना इसको 30 दिन में लागू करना श्रिम्प उद्योग के लिए एक बडे आघात से ज्यादा कुछ नहीं होगा।

एक सामान्य वातावरण में, इस तरह का विनाशकारी निर्णय सरकार से नहीं होना चाहिए। लेकिन आजकल, यहां तक कि सबसे सावधान और जोखिम प्रतिकूल व्यापारियों को भी इस बारे में चिंता है कि सरकार के भीतर के गुट उन्हे हानि न पहुँचा दें।

- www.seafoodsource.com

मूल्य वर्धित मत्स्य उत्पादों पर प्रशिक्षण

मेरा गाँव मेरा गौरव (एमजीएमजी) कार्यक्रम के तहत, 10 जनवरी 2018 को त्रिशूर के चेर्प ग्राम पंचायत के जल कन्यका क्लब के 45 कृषकों केलिए 'मूल्यवर्धित मत्स्य उत्पादों' पर एक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उदघाटन श्री सी.के. विनोद, अध्यक्ष, चेरुपु ग्राम पंचायत ने किया।

एक संक्षिप्त उद्घाटन समारोह के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। श्रीमती सी. आर लिशा, परियोजना समन्वयक, मात्स्यिकी विभाग, त्रिशूर ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। समारोह की अध्यक्षता श्रीमती सुजिशा कल्लियत, उपाध्यक्ष, चेर्प पंचायत ने की। डॉ. निकिता गोपाल, प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर-सीआईएफटी एवं एमजीएमजी टीम के ग्रुप लीडर ने प्रशिक्षण का एक संक्षिप्त अवलोकन प्रस्तुत किया। श्री रामकृष्णन, मात्स्यिकी समन्वयक, चेर्प पंचायत ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

आईसीएआर-सीआईएफटी के अन्य सदस्यों के रूप में डॉ पी.पी. मोहम्मद अशरफ, प्रधान वैज्ञानिक, श्रीमती एस.जे. लाली और डॉ. के. इलवरशन, वैज्ञानिक, श्री. नोबी वर्गीस और श्री. के. प्रभु, तकनीकी सहायक उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र के बाद प्रशिक्षण शुरू हुआ, इस में फिशकटलेट,

श्री सी.के. विनोद कार्यक्रम का उदघाटन करते हैं

फिशबाल्स, फिशफिंगर्स और ब्रडेड श्रिम्प आदि चार उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के बाद एक प्रतिक्रिया सत्र था जिस में प्रतिभागियों ने अपने संदेह का निवारण किया और उन्हें मूल्य वर्धन की संभावनाओं के साथ-साथ संस्थान से प्रौद्योगिकी संभावनाओं पर भी जानकारी दी गई।

-सीआईएफटी

PRAWN FEED
AVANTI
FEEDS LIMITED
In the business of quality Prawn feed and Prawn Exports
An ISO 9001: 2008 Certified Company
Aiding sustainability
& reliability to Aquaculture
MANAMEI
VANNAMEI FEED
FEED NO. 4
VANNAMEI FEED
SHRIMP FEED
PROFEED 4
BLACK TIGER
SHRIMP FEED
TITAN
PRAWN FEED
BLACK TIGER
SHRIMP FEED
Shrimp Hatchery
Feed Plant - Gujarat
Prawn Feed & Fish Feed
Prawn Processing & Exports
INNOVATIVE - SCIENTIFICALLY FORMULATED - PROVEN
• GREATER APPETITE • HEALTHY & FASTER GROWTH
• LOW FCR WITH HIGHER RETURNS • FRIENDLY WATER QUALITY
AVANT AQUA HEALTH CARE PRODUCTS
AVANTI A.H.C.P. RANGE
Thai Union
IN COLLABORATION WITH:
THAI UNION FEEDMILL CO., LTD.,
Thailand.
Avant MINER MATE
Chelated Trace
Mineral Supplement
Avant Saldo Mixtos
Marine Mineral
Avant D-Flow
Water Quality Improver
Avant ProW
Soil & Water Probiotic
Avant Bact
Gut Probiotic
Avant AmmoniAbsorb
AIDING SUSTAINABILITY & RELIABILITY TO AQUACULTURE
Ammonia Absorber
Avant Life
Oxy-Generator
Avant Immupak
Aiding Sustainability & Reliability to Aquaculture
Immunity Enhancer
Avant Catcher
Corporate Office: Avanti Feeds Limited
G-2, Concord Apartments 6-3-658, Somajiguda, Hyderabad - 500 082, India.
Ph: 040-2331 0260 / 61 Fax: 040-2331 1604. Web: www.avantifeeds.com
Regd. Office: Avanti Feeds Limited.
H.No.: 3, Plot No.: 3, Baymount, Rushikonda, Visakhapatnam - 530 045, Andhra Pradesh.

No. KERENG/2013/61656

Contact us to experience our expertise:
Raja Chandnani
Phone: **+44 20 74446320**
Email: **Raja.Chandnani@integrogroup.com**
www.Integrouk.com

INTEGRO UK
INSURANCE BROKERS